Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हिंदी

कक्षा IX

केरल सरकार
सार्वजनिक शिक्षा विभाग
2019

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
केरल, तिरुवनंतपुरम

NT-361-1-HINDI-9

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राष्ट्रगीत

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by :
State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website : www.scertkerala.gov.in
e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471 - 2341883, Fax : 0471 - 2341869
First Edition: 2019
Printed at : KBPS, Kakkanad, Kochi-30
© Department of Education, Government of Kerala

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्यारे छात्रो,

हिंदी की नवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक आपके हाथों में है। कहानी, कविता, पटकथा, डायरी, लेख, व्यंग्य लेख, पत्र, संस्मरण आदि आपकी पसंद की विभिन्न विधाएँ इसमें हैं। राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (NSQF) के मुताबिक कौशल विकास के अनुरूप गतिविधियाँ इसमें हैं। साथ ही आपदा प्रबंधन और जीवन कौशलों पर ध्यान दिया गया है। क्यू आर कोड (त्वरित प्रतिक्रिया संकेतावली) का प्रयोग भी पाठ्यपुस्तक में है। इसके साथ सूचना प्रौद्योगिकी का भरसक लाभ उठाएँ। आशा है, हिंदी भाषा और साहित्य पर अपना अधिकार पाने के साथ-साथ देश के सतर्क नागरिक के रूप में आपके विकास में भी यह मदद करेगी।

डॉ जे प्रसाद

निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

इकाई 1			7 - 28
पुल बनी थी माँ	नरेंद्र पुंडरीक	कविता	8
टीवी	वरुण ग्रोवर	पटकथा	10
पक्षी और दीमक	मुक्तिबोध	कहानी	17
टीवी	वरुण ग्रोवर	कहानी	23

इकाई 2			29 - 50
जिस गली में मैं रहता हूँ...	मिर्ज़ा गालिब	डायरी	30
गांधीजी गांधीजी कैसे बने	स्वयं प्रकाश	लेख	36
दीप जलाओ	त्रिलोचन	कविता	40
फूलों का शो	शिल्पी टॉस्टॉविन	लेख	44

इकाई 3			51 - 64
नंगे पैर	वेंकटेश माडगुलकर	कहानी	52
तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक	शिवमंगल सिंह 'सुमन'	कविता	58
अंदर के और बाहर के	विंदा करंदीकर	व्यंग्य लेख	60

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुक्रम

इकाई 4 — 65 - 80

अकाल में सारस	केदारनाथ सिंह	कविता	66
संसार पुस्तक है	जवाहरलाल नेहरू	पत्र	69
दौड़	आमोद कारखानिस	लेख	76

इकाई 5 — 81 - 92

मेरी ममतामई माँ	डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम	संस्मरण	82
राग गौरी	सूरदास	पद	85
ओ मेरे पिता	एकांत श्रीवास्तव	कविता	87

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आप जानें...

भाषा का एक सहज रूप है। अतः भाषार्जन नैसर्गिक प्रक्रिया है। विभिन्न विधाओं के माध्यम से हम भाषा का आदान-प्रदान करते हैं।

नवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक की पाँच इकाइयाँ हैं। हर अध्याय में प्रत्येक आशय पर केंद्रित होकर भिन्न व्यावहारिक विधाओं के सहारे भाषा के रूप दर्शाए गए हैं। प्रत्याशित अधिगम उपलब्धियों को पूर्ण रूप में अर्जित करने के लिए आपको ठीक-ठीक प्रक्रियाओं से गुज़रना है। प्रक्रियाओं से गुज़रते वक्त आशय के साथ-साथ भाषा तथ्यों का भी सही विश्लेषण अनिवार्य है। विश्लेषण की इस प्रक्रिया में भाषा पर अधिकार जमाने का पहला और अंतिम शर्त है- विचार विश्लेषण का माध्यम हिंदी ही हो। इन सारे लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए हम पाठ्यपुस्तक से गुजरेंगे ...।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इकाई 1

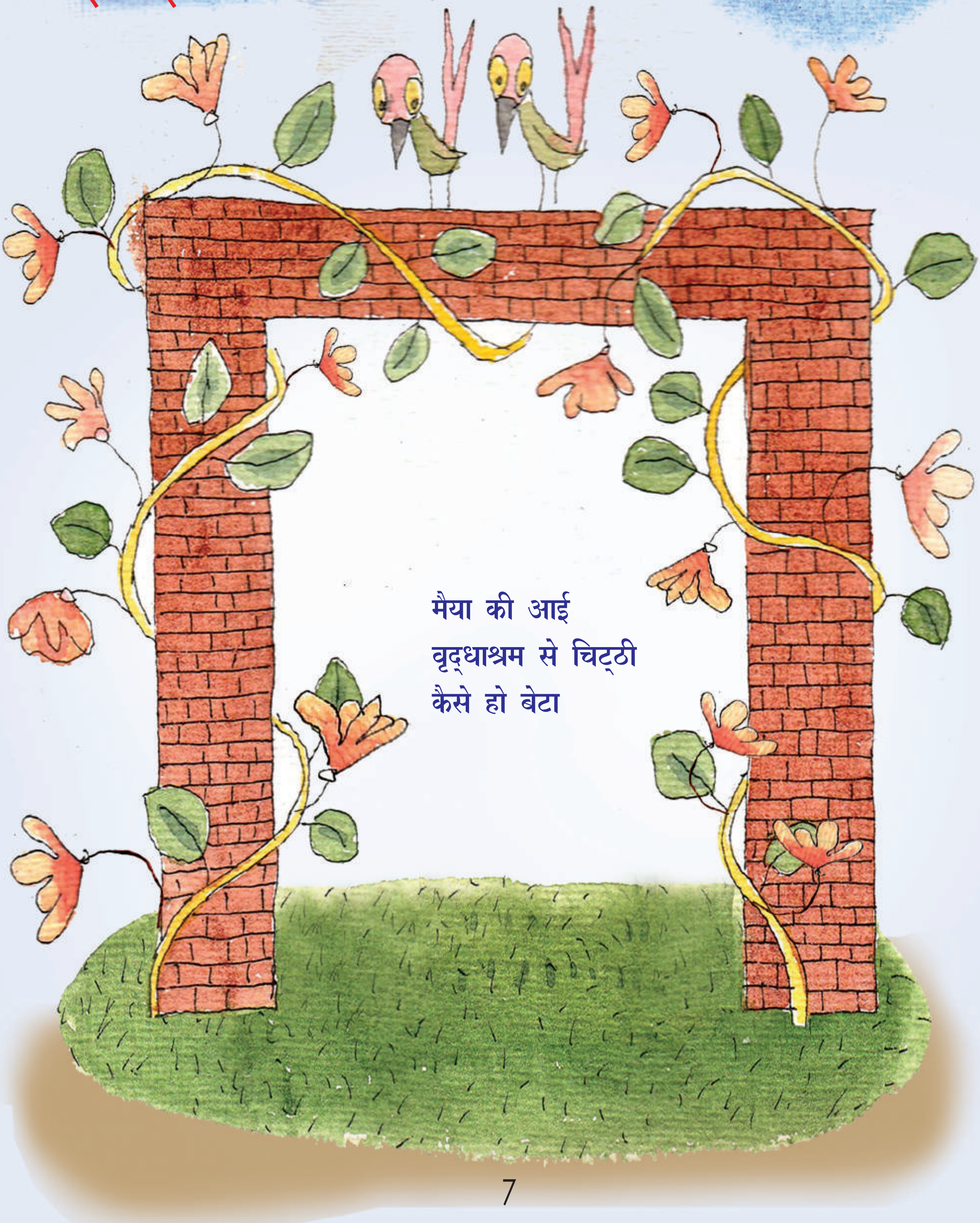

मैया की आई
वृद्धाश्रम से चिट्ठी
कैसे हो बेटा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आपने शॉर्ट फ़िल्म '**आराम घर**' देखी? चर्चा करें...

• *वृद्‌धाश्रम में रहनेवाली माँ किसके बारे में सोचती हैं?*

कविता

पुल बनी थी माँ

नरेंद्र पुंडरीक

4DDB42

हम भाइयों के बीच
पुल बनी थी माँ
जिसमें आए दिन
दौड़ती रहती थी बेधड़क
बिना किसी हरी लाल बत्ती के
हम लोगों की छुक छुक छक छक

पिता के बाद
हम भाइयों के बीच
पुल बनी माँ
अचानक नहीं टूटी
धीरे-धीरे टूटती रही
हम देखते रहे और
मानते रहे कि
बुढ़ा रही है माँ

माँ के बार-बार कहने को
हम मानकर चलते रहे
उसके बूढ़े होने की आदत और
अपनी हर आवाज़ में
धीरे-धीरे टूटती रही माँ

'पुल बनी थी माँ' से क्या तात्पर्य है?

'बुढ़ा रही है माँ' इसका आशय क्या है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हाथों हाथ रहती माँ
एक दिन हमारे कंधों में आ गई
धीरे-धीरे महसूस करने लगे हम
अपने वृषभ कंधों में
माँ का भारी होना

जब तक जीवित रही माँ
हम बदलते रहे अपने कंधे
माँ आखिर माँ ही तो है
बार-बार हमें कंधे बदलते देख
हमारे कंधों से उतर गई माँ
और माँ के कंधों से उतरते ही
उतर गए हमारे कंधे।

'माँ आखिर माँ ही तो है'
इससे आपने क्या समझा?

- **लिखें, निम्नलिखित आशय कविता की किन-किन पंक्तियों में हैं?**
  - **बेटों का जीवन बेरोकटोक चलती गाड़ी के समान रहा।**
  - **माँ की देख-भाल की ज़िम्मेदारी बेटों पर आ गई।**
  - **बेटे अपने दायित्व बदलते रहे।**
  - **माँ के चले जाने से बेटे बेसहारे बने।**
- **कविता का परिचय देते हुए टिप्पणी लिखें।**

नरेंद्र पुंडरीक

15 जनवरी 1958 को उत्तर प्रदेश के बांदा में जन्म। समकालीन हिंदी कविता के महत्वपूर्ण कवियों में से एक। आलोचना एवं संपादन के क्षेत्र में सक्रिय।
प्रमुख कविता संकलन : नंगे पाँव का रास्ता, सातों आकाशों की लाड़ली, इन्हें देखने दो इतनी-सी दुनिया, इस पृथ्वी की विराटता में।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पटकथा

वरुण ग्रोवर

टीवी का भी अपना इतिहास है...

टीवी

सीन 1

गोपू के घर के बाहर की कच्ची सड़क। दोपहर के दो बजे हैं।

(पहाड़ी इलाका। दूर-दूर तक फैले पहाड़ दिख रहे हैं। करीबन 8-10 साल की उम्र के तीन बच्चे– गोपू, चुन्नी और लल्लू कच्चे रास्ते पर खड़े हैं। गोपू देखने से ही बाकी दोनों पर हावी लगता है। वह ज़मीन पर झुका है और कुछ उठाने की कोशिश कर रहा है। उसके हाथ में मकोड़ा है।)

गोपू : (चुन्नी को मकोड़ा पकड़ाते हुए) ये ले... तेरा प्यारा मकोड़ा। अब खा इसकी कसम!

चुन्नी : (मुस्कुराकर मकोड़ा पकड़ते हुए) कैसे खानी है?

गोपू : अरे जैसे मास्टरजी बुलवाते हैं। बोल, "मैं कसम खाती हूँ..."

चुन्नी : मैं कसम खाती हूँ...

गोपू : कि हम चुपके से दूसरे गाँव जाएँगे...

चुन्नी : कि हम चुपके से दूसरे गाँव जाएँगे...

गोपू : और चुपके से टीवी देखकर आएँगे...

चुन्नी : (हँसी रोकते हुए) .... और चुपके से टीवी देखकर आएँगे...

गोपू : और यह बात किसीको नहीं बताएँगे। माँ को भी नहीं।

लल्लू : (बीच में टोककर) माँ को कैसे बताएँगे? माँ तो सो रही है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गोपू : हाँ, माँ तो सो रही है। अब मकोड़ा रख दे।

(चुन्नी मकोड़ा रख देती है। हाथ झाड़ती है।)

गोपू : (आगे बढ़ते हुए) तो फिर चलो।

(तीनों बच्चे कच्ची सड़क पर आगे बढ़ जाते हैं।)

सीन 2

पहाड़ की पगडंडी। दोपहर के 3 बजे हैं।

(बच्चे मेहनत से पहाड़ की पगडंडी चढ़ रहे हैं। सामने वाली एक चोटी पर टीवी टॉवर दिख रहा है।)

गोपू : देखा? यही वो टॉवर है जिससे टीवी आता है।

लल्लू : आता कहाँ है? आता होता तो हम दूसरे गाँव क्यों जाते?

गोपू : चुन्नी, यह लल्लू एकदम लल्लू है ना? बाबा ने बताया था ना कि इसी टॉवर से दूसरे गाँव में टीवी आता है और क्योंकि हमारा गाँव पहाड़ के इस तरफ़ है, हमारे में नहीं आता है।

चुन्नी : हाँ, मेरे बापू ने तो बक्सा और एन्टीना भी खरीद लिया था... हमने एन्टीना को

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सब तरफ़ घुमाया... पर टीवी पकड़ा ही नहीं।

गोपू : टीवी तो जादू है! ऐसे थोड़े-ही पकड़ेगा। हाय... क्या चीज़ है टीवी...

(गोपू टीवी की यादों में खोया हुआ आगे बढ़ता है, बाकी दोनों उसके पीछे-पीछे चल रहे हैं।)

सीन 3

मनोहर चाचा के घर का कमरा। सुबह के 8 बजे हैं।

(टीवी पर 26 जनवरी की परेड आ रही है। गोपू और उसके बाबा टकटकी लगाए देख रहे हैं। मनोहर चाचा बगल में बैठे हैं। टीवी में झाँकियाँ चल रही हैं, और एक कमेंट्री भी।)

टीवी से आती कमेंट्रीः और यह है झाँकी असम राज्य की... आगे-आगे बीहू नृत्य करती महिलाएँ...

गोपू : बाबा यह आवाज़ कहाँ से आ रही है?

मनोहर चाचा : यह भी टीवी से ही आ रही है गोपू लाल!

गोपू : जादू है ना...!!

सीन 4

पहाड़ी सड़क। शाम के 4 बजे हैं।

(तीनों बच्चे सड़क किनारे चल रहे हैं।)

गोपू : जादू था... सचमुच! चलो अब सड़क पार करनी है।

(सड़क पार करने की कोशिश। सामने से तेज़ी से एक बस आती है। चुन्नी दौड़कर पार कर लेती है, गोपू और लल्लू खड़े रह जाते हैं। बस में ज़ोर से ब्रेक लगता है। ड्राइवर गुस्से में सिर बाहर निकालता है।)

ड्राइवर : अबे देखके चलो...

(गोपू और लल्लू जल्दी-से सड़क पार करते हैं।)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चुन्नी : तुम लोग सच में छोटे बच्चे हो। सड़क पार करना भी नहीं आता?

गोपू : (झेंपते हुए) जल्दी चलो... अब देर हो रही है।

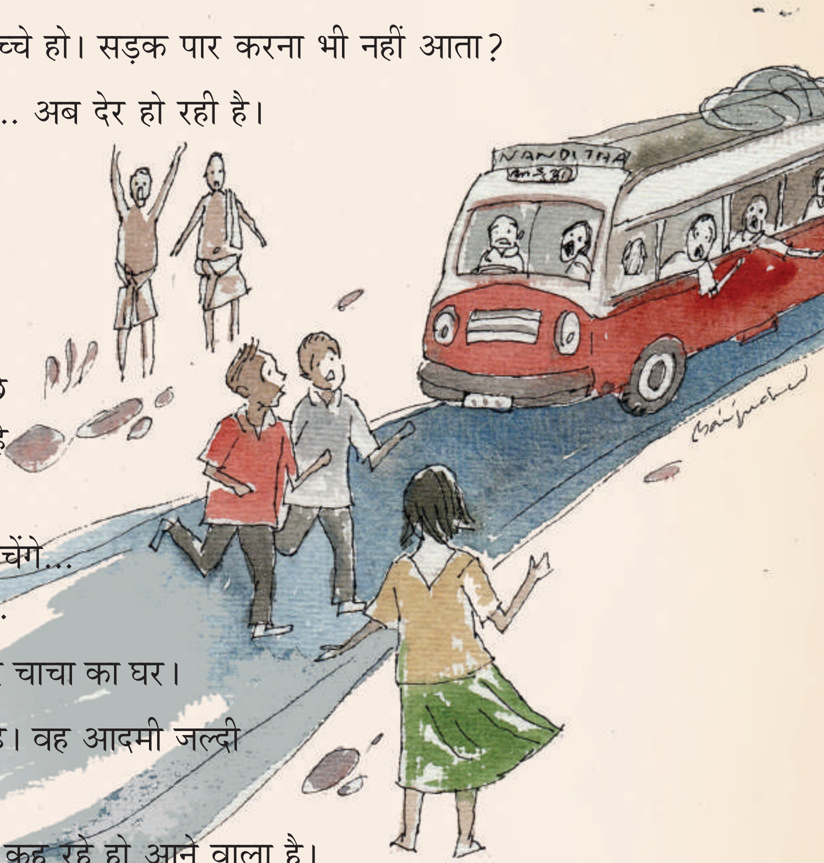

सीन 5

कस्बे की सब्ज़ी मंडी। शाम के 5 बजे हैं।

(लल्लू सब्ज़ी मंडी की भीड़ में थोड़ा पीछे रह गया है। गोपू और चुन्नी आगे चल रहे हैं। चुन्नी डरी हुई है।)

चुन्नी : तुमने कहा था जल्दी पहुँचेंगे... शाम तक वापस आएँगे...

गोपू : बस, आने वाला है मनोहर चाचा का घर।

(चुन्नी एक लंबे आदमी से टकरा जाती है। वह आदमी जल्दी में है, संभलते हुए आगे बढ़ जाता है।)

चुन्नी : (रुआँसी होकर) कब से कह रहे हो आने वाला है।

गोपू : (पीछे मुड़कर) अरे ये लल्लू कहाँ रह गया। और तू रो मत अब... टीवी देखना है ना? उसमें पता है– लोग बक्से के अंदर बंद होते हैं... छोटे-छोटे दिखते हैं... तेरे मकोड़ों की तरह... (लल्लू दिखता है) ए लल्लू.... जल्दी आ ना!

(लल्लू दौड़ता हुआ आता है। तीनों हाथ पकड़कर चलने लगते हैं।)

सीन 6

कस्बे की गली। शाम का समय।

(बच्चे एक गली के मोड़ पर हैं। सामने कच्चे-पक्के मकानों की कतार है।)

गोपू : बस यही गली है। इसीमें हैं मनोहर चाचा...

लल्लू : तो चलो...

गोपू : (मकानों को देखता हुआ) हाँ... लेकिन याद करने दो, कौन-सा घर है...

चुन्नी : पर कैसे...

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गोपू : अरे, उस घर के ऊपर टीवी का डंडा लगा हुआ है... एन्टीना!
(तीनों ध्यान से घरों को देखते हैं। गोपू का चेहरा उतर जाता है।)

गोपू : पर यहाँ तो...

लल्लू : सबकी छत पर लगा है!

चुन्नी : टीवीवाला डंडा! अब क्या करेंगे?

गोपू : (हिम्मत हारते हुए) पता नहीं। मनोहर चाचा ने बताया था उनके घर ही टीवी है... पर यहाँ तो सबके घर है।

लल्लू : (बेहद हताश) अब हम वापस चलें? (आसमान देखते हुए) नहीं? अंधेरा हो रहा है।

चुन्नी : हम खो गए।

(गोपू कुछ नहीं बोलता बस रोने लगता है। बाकी दोनों भी रोने लगते हैं।)

सीन 7

कस्बे की सड़क। देर शाम का समय।

(भीड़ जमा है। बच्चे रो रहे हैं। कस्बे के लोग उन्हें चुप करा रहे हैं।)

कस्बेवाला 1 : कहते हैं मनोहर चाचा से मिलने आए हैं... कीरतपुर से...

कस्बेवाला 2 : अब चुप हो जाओ। डरो मत। क्या नाम है तुम्हारा?

लल्लू : लल्लू!

चुन्नी : (रोते हुए) मुझे घर जाना है।
(मनोहर चाचा आ जाते हैं। गोपू को उठा लेते हैं।)

मनोहर : अरे गोपू... तुम अकेले कैसे आ गए?

गोपू : टीवी देखना था। हम तीनों को।
(कस्बेवाले एक-दूसरे का मुँह देखते हैं। मनोहर बच्चों को ले जाता है।)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सीन 8

मनोहर चाचा का घर। रात का समय।

(बाबा ने गोपू को गोद में बिठाया है। चुन्नी और लल्लू भी बैठे हैं।)

बाबा : (मनोहर को) गोपू शैतान है, यह सबको पता है। पर इतना शैतान... हमने सोचा नहीं था।

मनोहर : और पूरा रास्ता याद था इसे! चलो भई... अब टीवी चलाया जाए...। इतनी दूर से आए हैं तीन दीवाने।

(मनोहर टीवी चलाता है। गोपू, लल्लू और चुन्नी सीधे होकर बैठ जाते हैं। टीवी से आवाज़ आती है...तस्वीर दिखना अभी बाकी है।)

टीवी की आवाज़ : और मद्रास का अधिकतम तापमान रहा 34 डिग्री...
(गोपू की आँखें फैल रही हैं। टीवी के शीशे पर हल्की-हल्की रोशनी भी फैल रही है। तस्वीरें किसी भी पल दिख जाएँगी। और तभी, बिजली चली जाती है। घुप्प अंधेरा हो जाता है।)

गोपू, चुन्नी और लल्लू : (एक साथ अंधेरे में) हे भगवान...

वरुण ग्रोवर

26 जनवरी 1980 को हिमाचल प्रदेश के सुंदरनगर में जन्म। हिंदी फ़िल्मी क्षेत्र में पटकथाकार, गीतकार एवं निर्देशक के रूप में मशहूर।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

◆ डायरी लिखें।

गोपू घर पहुँचा। वह यादों में खो गया। फिर डायरी लिखने लगा।

- *लिखें, गोपू की डायरी।*

◆ *पटकथा के आधार पर तालिका की पूर्ति करें।*

दृश्य	स्थान	समय	घटना	पात्र

◆ *पटकथा की मूल-कथा पन्ना 24 में है, पढ़ें।*
कहानी की घटनाओं को क्रम से लिखें।

क्रम संख्या	घटना

◆ *पटकथा और कहानी की तुलना करें। टिप्पणी लिखें।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कहानी

पक्षी और दीमक

मुक्तिबोध

एक था पक्षी। वह नीले आसमान में खूब ऊँचाई पर उड़ता जा रहा था। उसके साथ उसके पिता और मित्र भी थे।

सब, बहुत ऊँचाई पर उड़नेवाले पक्षी थे। उनकी निगाहें भी बड़ी तेज थीं। उन्हें दूर-दूर की भनक और दूर-दूर की महक भी मिल जाती।

एक दिन वह नौजवान पक्षी ज़मीन पर चलती हुई एक बैल गाड़ी को देख लेता है। उसमें बड़े-बड़े बोरे भरे हुए हैं। गाड़ीवाला चिल्ला-चिल्लाकर कहता है, "दो दीमकें लो, एक पंख दो।"

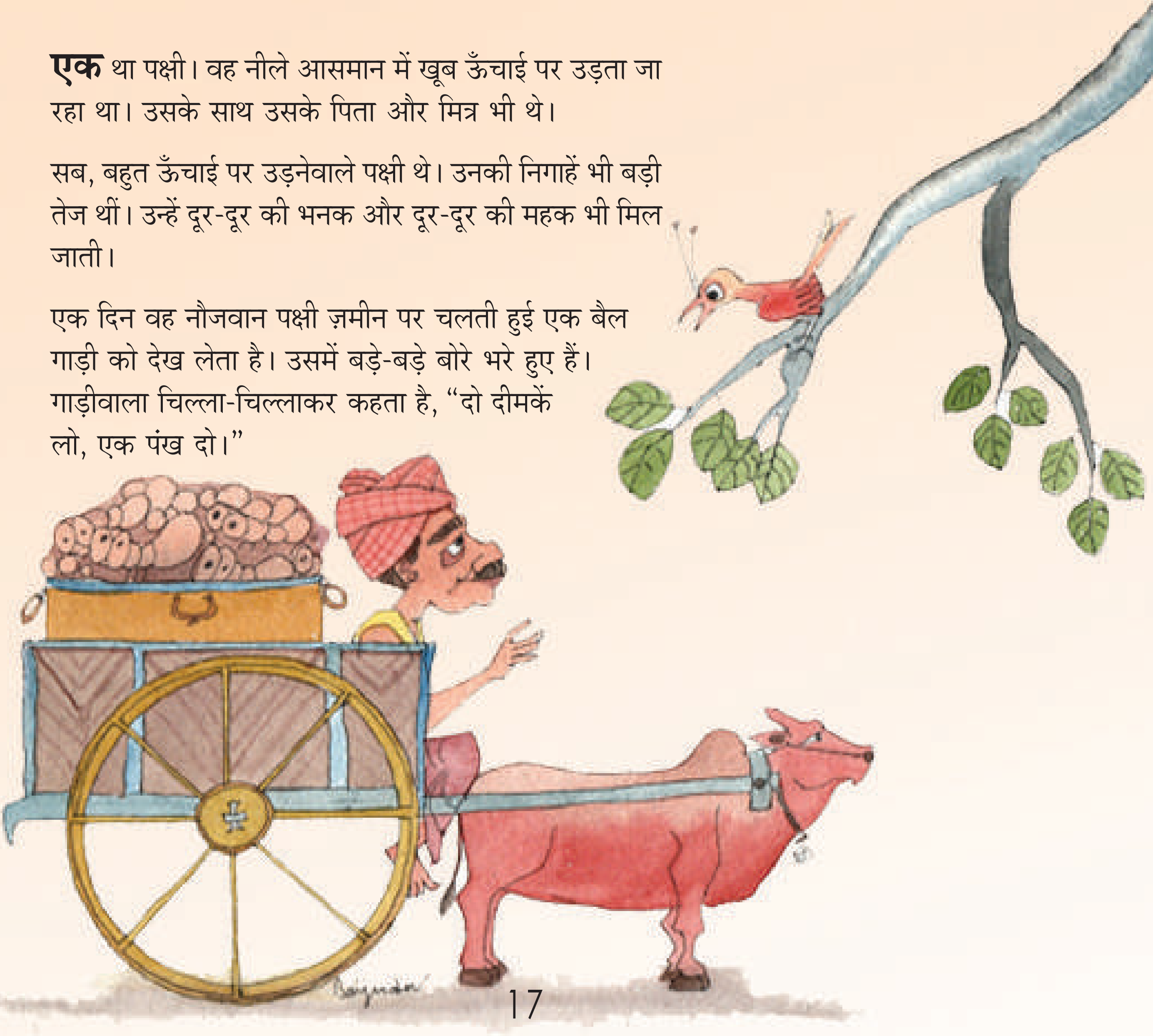

NT-361-2-HINDI-9

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उस नौजवान पक्षी को दीमकों का शौक था। वैसे तो ऊँचे उड़नेवाले पंछियों को, हवा में ही बहुत से कीड़े तैरते हुए मिल जाते, जिन्हें खाकर वे अपनी भूख थोड़ी-बहुत शांत कर लेते।

लेकिन दीमकें सिर्फ ज़मीन पर मिलती थीं। कभी-कभी पेड़ों पर– ज़मीन से तने पर चढ़कर, ऊँची डाल तक, वे अपना मटियाला लंबा घर बना लेती, लेकिन ऐसे कुछ ही पेड़ होते, और वे सब एक जगह न मिलते।

नौजवान पक्षी को लगा– यह बहुत बड़ी सुविधा है कि एक आदमी दीमकों को बोरों में भरकर बेच रहा है।

वह अपनी ऊँचाइयाँ छोड़कर मँड़राता हुआ नीचे उतरता है, और पेड़ की एक डाल पर बैठ जाता है।

दोनों का सौदा तय हो जाता है। अपनी चोंच से एक पर को खींचकर तोड़ने में उसे तकलीफ़ होती हैं; लेकिन उसे वह बरदाश्त कर लेता है। मुँह में बड़े स्वाद के साथ दो दीमकें दबाकर वह पक्षी फुर्र से उड़ जाता है।

अब उस पक्षी को गाड़ीवाले से दो दीमकें खरीदने और एक पर देने में बड़ी आसानी मालूम हुई। वह रोज़ तीसरे पहर नीचे उतरता और गाड़ीवाले को एक पंख देकर, दो दीमकें खरीद लेता।

पक्षी अपने पंख देकर दीमक लेता है। यहाँ पक्षी का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

कुछ दिनों तक ऐसा ही चलता रहा। एक दिन उसके पिता ने देख लिया। उसने समझाने की कोशिश की कि बेटे, दीमकें हमारा स्वाभाविक आहार नहीं हैं, और उनके लिए अपने पंख तो

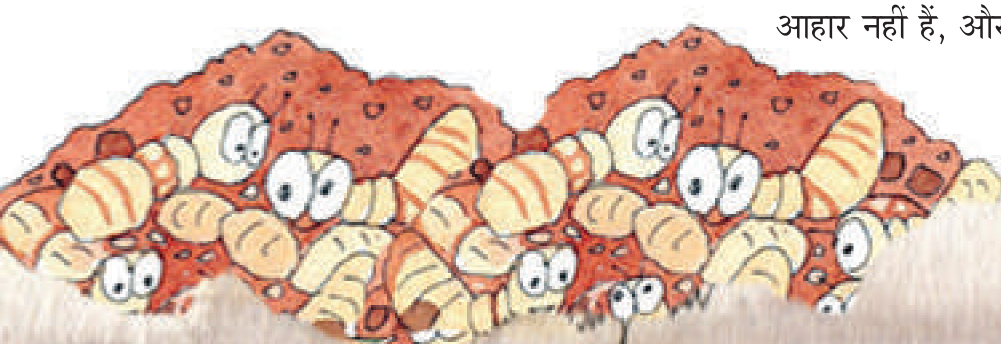

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हरगिज़ नहीं दिए जा सकते।

लेकिन, उस नौजवान पक्षी ने बड़े ही गर्व से अपना मुँह दूसरी ओर कर लिया।

'दीमकें हमारा स्वाभाविक आहार नहीं हैं, और उनके लिए अपने पंख तो हरगिज़ नहीं दिए जा सकते।' यहाँ किस सचाई की ओर संकेत किया गया है?

उसे ज़मीन पर उतरकर दीमकें खाने की चट लग गई थी। अब उसे न तो दूसरे कीड़े अच्छे लगते, न फल, न अनाज के दाने। दीमकों का शौक अब उसपर हावी हो गया था।

लेकिन, ऐसा कितने दिनों तक चलता। उसके पंखों की संख्या लगातार घटती चली गई। अब वह, ऊँचाइयों पर, अपना संतुलन साध नहीं सकता था, न बहुत समय तक पंख उसे सहारा दे सकते थे। आकाश-यात्रा के दौरान उसे, जल्दी-जल्दी पहाड़ी चट्टानों, पेड़ों की चोटियों, गुंबदों और बुर्जों पर हाँफते हुए बैठ जाना पड़ता। उसके परिवारवाले तथा मित्र ऊँचाइयों पर तैरते हुए आगे बढ़ जाते। वह बहुत पिछड़ जाता। फिर भी दीमक खाने का उसका शौक कम नहीं हुआ। दीमकों के लिए गाड़ीवाले को वह अपने पंख तोड़-तोड़कर देता रहा।

फिर, उसने सोचा कि आसमान में उड़ना ही फिजूल है। वह मूर्खों का काम है। उसकी हालत यह थी कि अब वह आसमान में उड़ ही नहीं सकता था। वह सिर्फ़ एक पेड़ से उड़कर दूसरे पेड़ तक पहुँच पाता। धीरे-धीरे उसकी यह शक्ति भी कम होती गई। और एक समय वह आया जब वह बड़ी मुश्किल से, पेड़ की एक डाल से लगी हुई दूसरी डाल पर, चलकर, फुदककर पहुँचता। लेकिन दीमक खाने का शौक नहीं छूटा।

बीच-बीच में गाड़ीवाला बुत्ता दे जाता। वह कहीं नज़र में न आता। पक्षी उसके इंतज़ार में घुलता रहता।

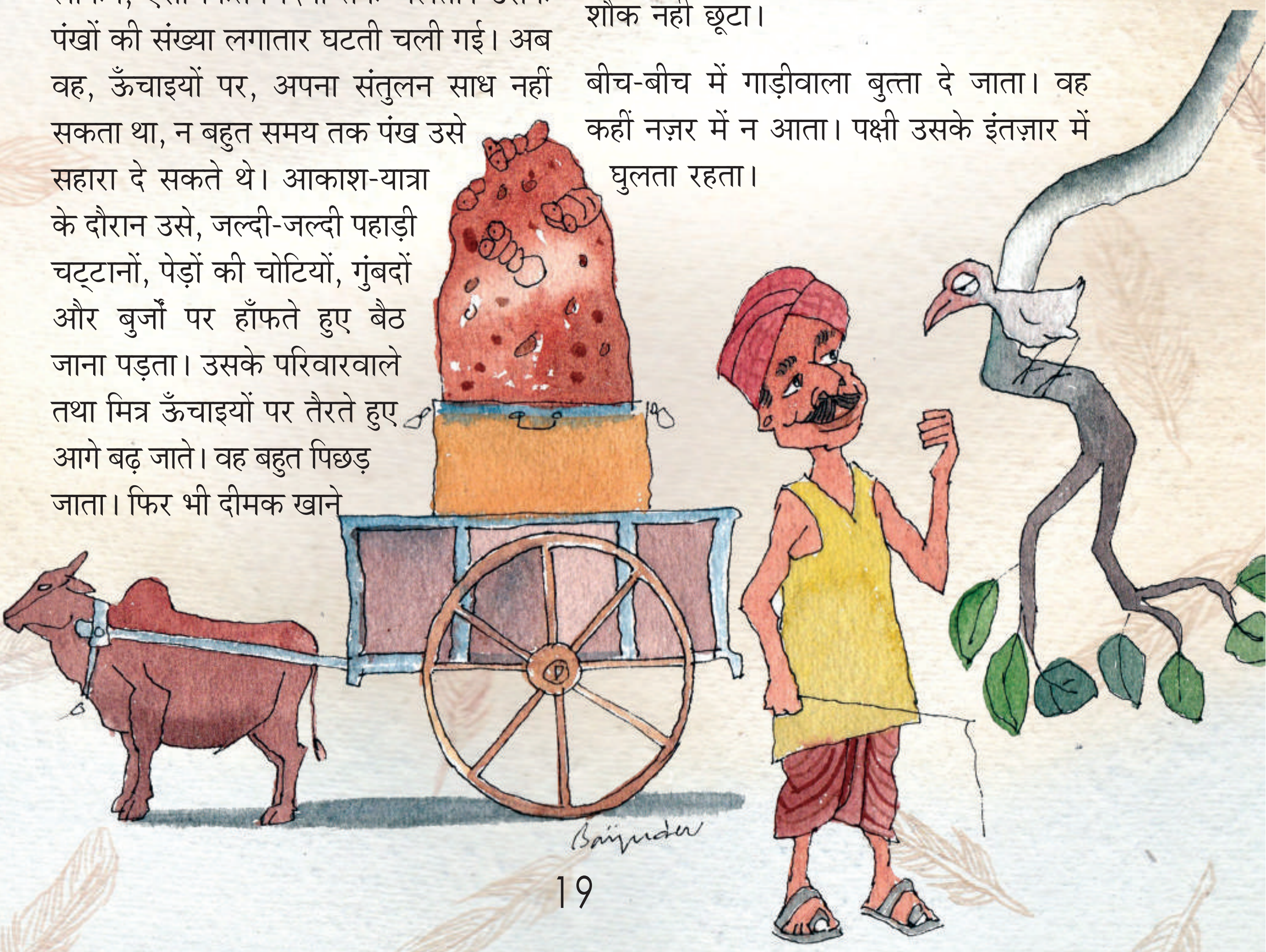

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लेकिन, दीमकों का शौक जो उसे था। उसने सोचा, "मैं खुद दीमकें ढूँढूँगा।" इसलिए वह पेड़ पर से उतरकर ज़मीन पर आ गया; और घास के एक लहराते गुच्छे में सिमटकर बैठ गया।

फिर, एक दिन उस पक्षी के जी में न मालूम क्या आया। वह खूब मेहनत से ज़मीन में से दीमकें चुन-चुनकर, खाने के बजाय, उन्हें इकट्ठा करने लगा। अब उसके पास दीमकों के ढेर के ढेर हो गए।

फिर, एक दिन एकाएक, वह गाड़ीवाला दिखाई दिया। पक्षी को बड़ी खुशी हुई। उसने पुकारकर कहा, "गाड़ीवाले! ओ गाड़ीवाले! मैं कब से तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था।"

पहचानी आवाज़ सुनकर गाड़ीवाला रुक गया। तब पक्षी ने कहा, "देखो, मैंने कितनी सारी दीमकें जमा कर ली हैं।"

गाड़ीवाले को पक्षी की बात समझ में नहीं आई। उसने सिर्फ़ इतना कहा, "तो मैं क्या करूँ।"

"ये मेरी दीमकें ले लो, और मेरे पंख मुझे वापस कर दो," पक्षी ने जवाब दिया।

पक्षी को बेवकूफ कहने के संबंध में आपकी राय क्या है?

गाड़ीवाला ठठाकर हँस पड़ा। उसने कहा, "बेवकूफ, मैं दीमक के बदले पंख लेता हूँ, पंख के बदले दीमक नहीं!"

गाड़ीवाले ने 'पंख' शब्द पर बहुत ज़ोर दिया था।

गाड़ीवाला चला गया। पक्षी छटपटाकर रह गया।

एक दिन एक काली बिल्ली आई और अपने मुँह में उसे दबाकर चली गई।

तब उस पक्षी का खून टपक-टपककर ज़मीन पर बूँदों की लकीर बना रहा था।

◆ **नमूने के अनुसार कहानी से प्रसंगों को चुनकर लिखें।**

व्यवहार	प्रसंग
◆ अलसतापूर्ण कार्य करना।	◆ नौजवान पक्षी को लगा– यह बहुत बड़ी सुविधा है कि एक आदमी दीमकों को बोरों में भरकर बेच रहा है।
◆ तात्कालिक लाभ के लिए अस्तित्व नष्ट करना।	
◆ बड़ों की बातों को बिना सूझ-बूझ के धिक्कारना।	
◆ प्रलोभन में पूरी तरह फँस जाना।	
◆ अपनी गलतियों पर सफ़ाई खोजना।	
◆ खोए हुए अस्तित्व को फिर से पाने की कोशिश करना।	
◆ धोखेबाजी को पहचानकर निराश होना।	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- *‘पक्षी और दीमक’ कहानी में ये किन-किन का प्रतिनिधित्व करते हैं?*

गाड़ीवाला	पक्षी	दीमक	पंख	बिल्ली

- *आज के ज़माने में ‘पक्षी और दीमक’ कहानी की प्रासंगिकता कहाँ तक है? चर्चा करके टिप्पणी लिखें।*

- *पक्षी की चरित्रगत विशेषताओं का विश्लेषण करें। टिप्पणी लिखें।*

अनुबद्ध कार्य

- *‘पक्षी और दीमक’ को फिल्माएँ।*

  इसके लिए पटकथा तैयार करें।

4DM75P

- *‘पक्षी और दीमक’ कहानी का ऑडियॉ सुनें और अपनी आवाज़ में कहानी का रेकॉर्डिंग करें।*

इसपर विचार करें :

एक दिन उसके पिता ने देख लिया। उसने समझाने की कोशिश की कि बेटे, दीमकें हमारा स्वाभाविक आहार नहीं हैं, और उनके लिए अपने पंख हरगिज़ नहीं दिए जा सकते।

- रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें :
  - ये शब्द कैसे बने हैं?
  - क्या, इनका विभाजन संभव है? तो, कैसे?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

◆ *पूरी इकाई से एक बार और गुज़रें। ऐसे परसर्गयुक्त शब्दों को पहचानें।*

परसर्गयुक्त शब्द	सर्वनाम	परसर्ग

'पक्षी और दीमक' के बारे में...

मुक्तिबोध की कहानी 'पक्षी और दीमक' दरअसल एक लंबी कहानी है, जिसके भीतर पक्षी और दीमक की कहानी समाहित है। इसी आधार पर कहानी का शीर्षक भी रखा गया है। इस कहानी को कथानायक 'मैं' एक अन्य पात्र श्यामला को सुनाता है। यहाँ संपूर्ण कहानी के भीतर की एक छोटी कहानी ही 'पक्षी और दीमक' शीर्षक पर दी गई है।

गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

हिंदी साहित्य की स्वातंत्र्योत्तर प्रगतिशील काव्यधारा के शीर्षस्थ व्यक्तित्व। सर्वाधिक चर्चा के केंद्र में रहनेवाले कहानीकार एवं समीक्षक। प्रमुख रचनाएँ : चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी भूरी खाक धूल (कविता संग्रह); काठ का सपना, विपात्र, सतह से उठता आदमी (कहानी संग्रह); नई कविता का आत्म संघर्ष (आलोचना)

जन्म : 13 नवंबर 1927
मृत्यु : 11 सितंबर 1964

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अतिरिक्त वाचन के लिए

कहानी

टीवी

वरुण ग्रोवर

बात सिर्फ़ इतनी-सी थी कि गोपू को टीवी देखना था। और यही सोचकर तीनों निकल पड़े थे।

गोपू का गाँव पहाड़ के उस तरफ़ था जहाँ टीवी नहीं आता था। शाम को डूबने से पहले सूरज पहाड़ के सबसे ऊपर लगे उस बड़े-से टॉवर की नोक पे कुछ पलों के लिए टिक जाता था। गोपू को पता था कि उसी टॉवर से टीवी आता है। "वो टॉवर अभी हमारे गाँव में टीवी नहीं देता... वरना चुन्नी के पिताजी ने तो बक्सा और एन्टीना, दोनों खरीद लिए हैं।" गोपू ने लल्लू को अपनी माँ के लहज़े में समझाते हुए कहा।

गोपू को उसके बाबा ने पहाड़ के उस पारवाले गाँव में टीवी दिखाई थी - अपने दोस्त मनोहर के घर। गोपू ने उस टीवी में 26 जनवरी की परेड देखी थी... बड़ी-बड़ी तोपें, नाचते लड़के-लड़कियाँ, झाँकियाँ, और पता नहीं कहाँ से आती एक आवाज़ जो सारा दृश्य समझा रही थी। जादू था जादू!

तो गोपू ने यह बात अपने दोस्त लल्लू को और लल्लू ने चुन्नी को बताई। लल्लू और चुन्नी को दूसरे गाँव जाकर टीवी देखने का गोपू का आइडिया पसंद आया। ज़्यादा देर नहीं लगेगी, इसका गोपू को अंदाज़ा था। दोपहर को निकले तो शाम तक वापस आ जाएँगे। चुन्नी यह बात किसीको ना बताए इसलिए गोपू ने उसको दो मकोड़ों की कसम भी खिलाई। चुन्नी को मकोड़े बहुत पसंद थे और उनकी झूठी कसम वो कभी नहीं खाती थी। और यूँ, अपनी-अपनी माँओं के सोते ही, तीनों टीवीवाले पहाड़ की तरफ निकल पड़े।

बड़ी मुश्किल से पहाड़ चढ़कर उस पार पहुँचे ही थे कि अचानक सामने बड़ी-सी बस आ गई। चुन्नी तो आगे निकल गई पर गोपू और लल्लू ठगे से खड़े रह गए। बसवाले ने झटके से ब्रेक लगाई और मुँह बाहर निकालकर फटकारा भी। चुन्नी ने भी मौका देखकर डाँट लगा दी और अब से हाथ पकड़कर संग चलने को कहा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मनोहर चाचा का गाँव अब दूर नहीं था। पहाड़ों में रास्ता ढूँढ़ना नहीं पड़ता, खुद बन जाता है। गोपू को पता था कि इस मोड़ के थोड़ा आगे सब्ज़ी मंडी है। उसी के पीछेवाले रस्ते से वो घर आता है जहाँ उसे टीवी के दर्शन हुए थे। सब्ज़ी मंडी में आज बहुत भीड़ थी। चुन्नी थोड़ा डर गई। गोपू ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे टीवी के जादू के बारे में बताने लगा। गोपू को मनोहर चाचा के घर की पहचान थी क्योंकि उसकी छत पर एक सुंदर-सा, लहराता एन्टीना लगा हुआ था। पर यह क्या? इस सड़क की तो हर मुंडेर पर वैसे ही एन्टीना था! गोपू ने एक-दो घरों में झाँककर पहचानने की कोशिश भी की लेकिन यहाँ तो सब घर भी एक से थे। और एन्टीना... यही तो उसकी निशानी थी।

अब गोपू की भी रुलाई छूट गई। उसे रोता देख चुन्नी और लल्लू भी रोने लगे। बीच सड़क में तीन बच्चों को रोता देख तुरंत ही लोग जमा हो गए और सवाल एवं दुलार बरसाने लगे। गोपू ने बताया कि वे लोग मनोहर चाचा के घर टीवी देखने आए थे। लेकिन यहाँ तो सबके घर ही टीवी है। चुन्नी ने कहा कि ये गोपू का ही आइडिया था। लल्लू ने कहा कि उसे अब टीवी नहीं देखना, घर जाना है। जल्दी ही मनोहर चाचा भी आ गए जो हैरान थे कि तीन छोटे बच्चे इतनी दूर से टीवी देखने आए हैं।

तीनों के घर ख़बर भिजवा दी गई कि परेशान ना हों। बाबा भी आ गए और तय हुआ कि आज टीवी देखकर ही वापस जाएँगे। तीनों चाव से बैठे और टीवी का बटन दबाया गया। एक जादुई आवाज़ आई और बक्से के काँच पर हल्की-सी रोशनी की हलचल हुई... गोपू की आँखें चौड़ी हुईं पर तभी, बिजली चली गई।

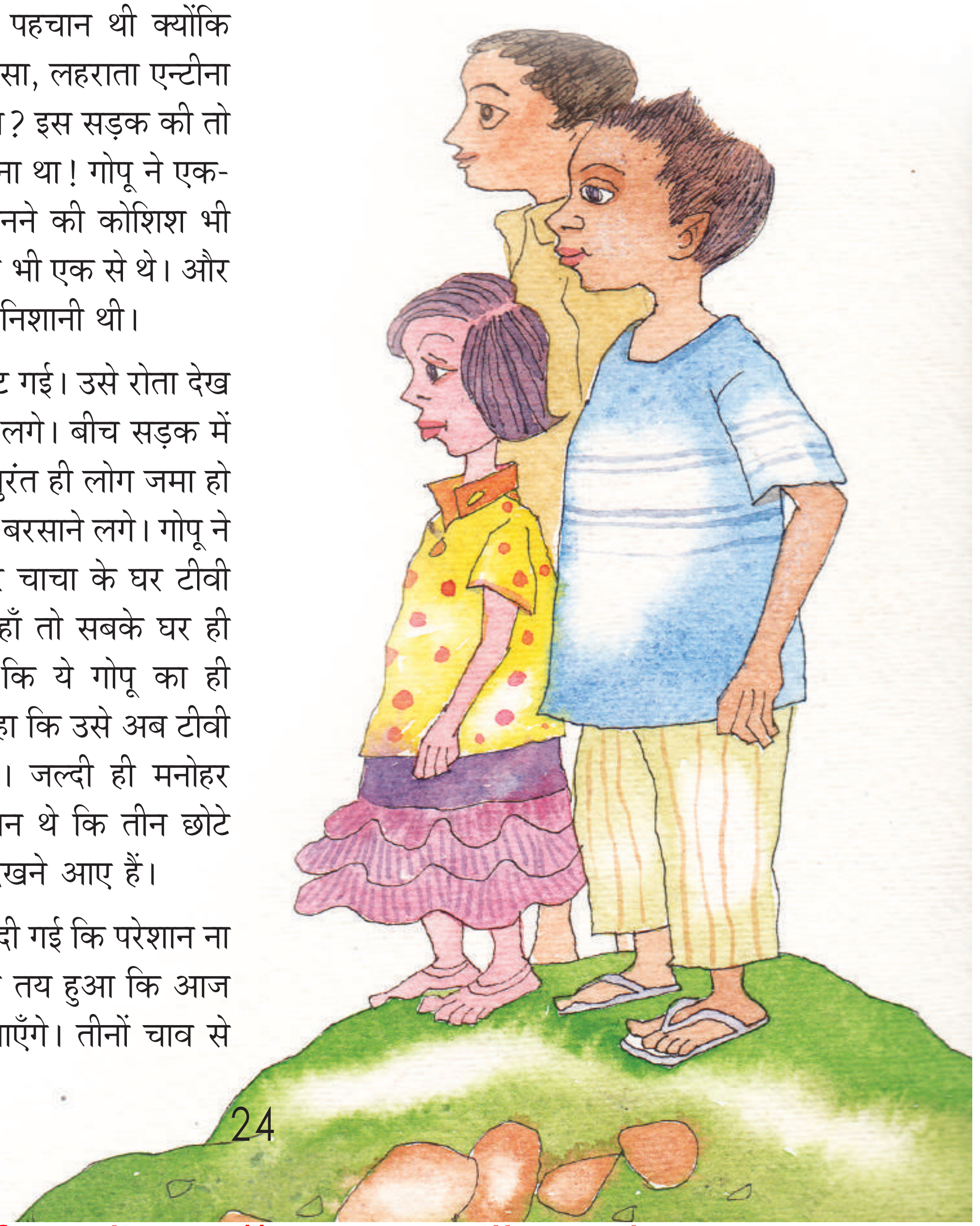

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मदद लें...

पुल बनी थी माँ

आखिर	-	अंत में
आदत	-	स्वभाव habit
कंधा उतरना	-	दुर्बल होना
कंधा बदलना	-	दायित्व बदलना
कंधों से उतरना	-	मर जाना
टूटती रही	-	दुर्बल होती रही
पुल	-	सेतु bridge
बुढ़ा रही है	-	बुढ़िया हो रही है
बेधड़क	-	बिना बाधा के
महसूस करना	-	अनुभव करना
वृषभ कंधा	-	सशक्त कंधा
हाथों हाथ रहना	-	संभालना

टीवी

नोक	-	अग्रभाग അഗ്രഭാഗം முனைப்பகுதி ತುದಿಭಾಗ
लहज़ा	-	बोलने का ढंग ഉച്ചാരണരീതി - உச்சரிப்பு முறை ಉಚ್ಚರಿಸುವ ವಿಧಾನ
तोप	-	പീരങ്കി cannon பீரங்கி ಫಿರಂಗಿ
झाँकी	-	मनोहर दृश्य a scene

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अंदाज़ा	-	अनुमान ഊഹം approximation ஏகதேசம் ಅಂದಾಜು
मकोड़ा	-	ചെറിയ പുഴു a small insect சிறு புழு ಸಣ್ಣ ಹುಳ
कसम खाना	-	कार्य करने की प्रतिज्ञा करना।
ठगना	-	धोखा देना ചതിക്കുക to cheat ஏமாற்று ಮೋಸಮಾಡು
झेंपते हुए	-	शर्माते हुए
फटकारना	-	क्रोधपूर्वक कड़ी बातें कहना ശകാരിക്കുക திட்டுதல் ಬಯ್ಯುವುದು
डाँटना	-	फटकारना ശകാരിക്കുക to scold திட்டுதல் ಬಯ್ಯುವುದು
मुंडेर	-	വീടിന്റെ പാരപ്പെറ്റ് a parapet வீட்டின் கைப்பிடிச் சுவர் ಮನೆಯ ಸನ್ ಶೇಡ್
दुलार	-	प्यार
काँच	-	screen திரை ಪರದೆ
फर्क	-	अंतर വ്യത്യാസം difference வித்தியாசம் ವ್ಯತ್ಯಾಸ
किरदार	-	role பங்கு ಪಾತ್ರ

पक्षी और दीमक

इंतज़ार	-	प्रतीक्षा
खूब	-	बहुत enough വേണ്ടുവോളം வேண்டுமளவிற்கு ಸಾಕಷ್ಟು
गुच्छा	-	एक प्रकार की एकत्रित वस्तुओं का समूह ഒരേ തരത്തിലുള്ള വസ്തുക്കളുടെ കൂട്ടം ஒரேதரத்திலுள்ள பொருட்களின் கூட்டம் ಒಂದೆ ತರದ ವಸ್ತುಗಳ ಸಮೂಹ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गुंबद	- गोल और उभरी हुई छत (जैसे:-मस्जिद का गुंबद) താഴികക്കുടം a dome கோபுரம் *ಗೋಪುರ, ಟವರ್*
घटना	- कम होना
घास	- तृण, तिनका
घुलता	- क्षीण होता
चट्टान	- पत्थर का अत्यधिक विशाल खंड (शिलाखंड)
चोंच	- पक्षियों के ओंठ പക്ഷികളുടെ ചുണ്ട് Beak பறவையின் அலகு *ಕೊಕ್ಕು*
चोटी	- पेड़ों की शिखा
टपकना	- बूँद-बूँद गिरना
तकलीफ़	- कष्ट, संकट ബുദ്ധിമുട്ട് Difficulty கஷ்டம் *ಕಷ್ಟ*
तना	- पेड़ का धड़ വൃക്ഷത്തിന്റെ തായ്ത്തടി Trunk of a tree மரத்தின் தாய்த்தடி *ಮರದ ಕಾಂಡ*
तेज़	- तीक्ष्ण या पैनी धारवाला മൂർച്ചയുള്ള Sharp கூர்மையான *ಹರಿತವಾದ*
दीमक	- सफेद चींटी, वल्मीक ചിതൽ white ant கறையான் *ಗೆದ್ದಲು*
निगाह	- नज़र, दृष्टि
पंख	- डैना, पर ചിറക് wing சிறகு *ರೆಕ್ಕೆ*
पहर	- तीन घंटे का समय യാമം நிமிடம், யாமம் *ಯಾಮ*
फिजूल	- निरर्थक, व्यर्थ
फुदकना	- उछलते हुए चलना ചാടിച്ചാടി നടക്കുക to hope துள்ளித்துள்ளி நடத்தல் *ಹಾರಿಹಾರಿ ನಡೆಯುವುದು*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भनक - मंद ध्वनि

बरदाश्त करना - सहन करना

बुर्ज - मीनार ഗോപുരം tower கோபுரம் ಟವರ್

बुत्ता - धोखा കപടം fraud கபடம் ಕಪಟ

बेवक़ूफ़ - मूर्ख വിഡ്ഢിയായ Stupid முட்டாளான ಅವಿವೇಕಿ

बोरा - ചാക്ക് sack கோணிப்பை ಗೋಣಿ ಚೀಲ

मटियाला - मटमैला ചെളിനിറഞ്ഞ அழுக்குப்படிந்த ಕೆಸರು ತುಂಬಿದ

महक - गंध या सुगंध

सिमटना - संकुचित होना ചുരുണ്ട് കൂടുക To be contracted
சுருண்டு கூடுவது ಸಣ್ಣದಾಗು

सौदा - വ്യാപാരം வியாபாரம் ವ್ಯಾಪಾರ

हरगिज़ - कभी भी ഒരിക്കലും never ஒருபோதும்
ಒಮ್ಮೆಯೂ ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ

हाँफना - साँस की गति का तीव्र होना കിതക്കുക to pant
மூச்சு முட்டுவது ಏದುಸಿರು

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इकाई – 2

"हँसते-हँसते मेरे फांसी चढ़ने की सूरत में हिंदुस्तानी माताएँ अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरज़ू किया करेंगी और देश की आज़ादी के लिए कुर्बानी देनेवालों की तादाद इतनी बढ़ जाएगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी।"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

डायरी

अब तक घटित घटनाओं या उससे संबंध रखनेवाली घटनाओं का काल-क्रमानुसार विवरण इतिहास होता है।

बताएँ, हमारे देश की प्रमुख ऐतिहासिक घटनाएँ कौन-कौन सी हैं?

जिस गली में मैं रहता हूँ...

मिर्ज़ा ग़ालिब

अनुवादक : डॉ. कैलाश नारद

अंग्रेज़ों ने दिल्ली में आते ही सीधे-सादे लोगों को मारना शुरू कर दिया। उन्होंने गरीबों के घर भी जला दिए। गोरों के डर से दिल्लीवालों में भगदड़ मच गई। अपनी-अपनी जान बचाकर वे भाग निकले।

जिस गली में मैं रहता हूँ उसमें सिर्फ़ दस-बारह घर थे। गली में घुसने का सिर्फ़ एक ही रास्ता था। वहाँ कोई कुआँ नहीं था। जो लोग भाग नहीं पाए उन सब ने मिलकर गली का दरवाज़ा भीतर से बंद कर दिया और वहाँ पत्थर रख दिए।

घरों में खाने-पीने का जितना सामान था, धीरे-धीरे खत्म होने लगा। पानी की बड़ी दिक्कत थी। लोग बड़ी सावधानी से आहिस्ता-आहिस्ता उस पानी को पी रहे थे, लेकिन आखिरकार वे घड़े भी खाली हो गए। ऐसे में गली में रहने वाले दो दिन और दो रात तक भूखे-प्यासे समय काटते रहे। लेकिन जब प्यास बर्दाश्त नहीं हुई, तो परेशान लोगों ने गली का दरवाज़ा खोल दिया। वे पानी की तलाश में बर्तन लेकर निकल पड़े। लेकिन पानी तो दूर-दूर तक कहीं नहीं था। शोरा बारूद बनाने के काम में आता है। उसी शोरे का पानी जब आसपास मिला तो गलीवाले उस पानी को घरों में ले आए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वैसे ज़हरीले पानी को पीकर ही उन्होंने प्यास बुझाई। वह पानी इतना कड़वा और बदबूदार था कि लगा जैसे पानी नहीं, मौत पी रहे हों।

'लगा जैसे पानी नहीं, मौत पी रहे हों' यहाँ किस हालत की ओर संकेत है?

एक दिन बरसात हुई। खूब पानी बरसा। हमने एक चादर बाँध ली और एक मटका उसके नीचे रख दिया। वह पानी ही उस वक्त हमारे लिए सबसे बड़ी दौलत थी।

असली मुसीबत 5 अक्तूबर 1857 को आई, जब कुछ अंग्रेज़ मेरे घर में घुस आए। उन्होंने मेरे साथ मेरे दोनों बच्चों और नौकरों के साथ ही कुछ पड़ोसियों को भी गिरफ़्तार कर लिया। वहाँ से कुछ दूरी पर कर्नल ब्राउन नाम का एक अंग्रेज़ अफ़सर था। गिरफ़्तार किए गए लोग एक-एक कर उसके सामने पेश किए जा रहे थे। ब्राउन का चेहरा सुर्ख था। आँखें भी लाल-लाल थीं। उसकी ऊँचाई छह फुट से भी ज़्यादा थी। उसने मुझसे पूछा, "आप क्या करते हैं?"

मैंने कहा, "उर्दू में कविता लिखता हूँ।"

"तो तुम पोयट हो?" उसने कहा।

मैंने सिर हिलाकर हामी भरी, "हाँ।"

मेरे जवाब से ब्राउन को खुशी हुई। उसने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया, "इनको इज़्ज़त के साथ घर वापस छोड़ आओ।"

'इनको इज़्ज़त के साथ घर वापस छोड़ आओ' ब्राउन के स्वभाव की कौन-सी विशेषता यहाँ प्रकट होती है?

मैंने कर्नल ब्राउन से निवेदन किया कि मेरे साथ गिरफ़्तार किए गए पड़ोसी बेहद सीधे-सादे लोग हैं। उन्हें भी रिहा कर दिया जाए।

"ये लोग भी कविता करते हैं।" मैंने कहा।

कर्नल ने उनको भी घर जाने की इज़ाज़त दे दी। इस तरह कविता के कारण उस रोज़ करीब पचास आदमियों की जानें बच गईं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हम गलीवालों ने तो किसी तरह अपने प्राण बचा लिए, मगर मैं उन हज़ारों अभागे दिल्लीवालों के बारे में क्या कहूँ, जो हवालात और कैदखाने में बंद कर दिए गए थे। जेल शहर से बाहर थी और हवालात दिल्ली के भीतर। इन दोनों ही जगहों में बेशुमार बेगुनाहों को ठूँस-ठूँसकर भर दिया गया था- इस कदर भर दिया गया कि लगता था, आदमी के भीतर आदमी समाया जा रहा हो। साँस लेने में भी दिक्कत हो रही थी। इन दोनों ही कैदखानों के बंदियों को बाद में फाँसी दे दी गई। नहीं मालूम, कितने लाख लोग मार डाले गए।

दिल्ली में अब कुछ ही हज़ार लोग बचे होंगे। बाकी सब, अंग्रेज़ों के गुस्से का शिकार हो गए। बचे सिर्फ़ वे, जो दिल्ली से भाग गए। वे लोग खुशकिस्मत थे, वरना उन्हें भी फाँसी दे दी जाती। दिल्ली में रहना ही उन दिनों मानों अपराध हो गया था।

मेरी पहचान का भिश्ती था- चिराग अली। बेहद सीधा आदमी। रोज़ सुबह-शाम नहर का पानी अपनी मशक में भरता और अल्लाह के गुण गाता हुआ सड़कों को सींचा करता। खाने के लिए जो भी रूखी-सूखी मिल जाती उसीको गले के नीचे उतार अपने में मग्न रहता। एक रोज़ दिल्ली के बड़े हाकिम हडसन साहब जब सड़क से अपने घोड़े पर सवार होकर निकल रहे थे, चिराग अली सड़क सींच रहा था। उसने हडसन साहब को सलाम नहीं किया, ईश्वर के गुण गाता रहा। हडसन साहब को जो गुस्सा आया, उन्होंने अपनी तलवार से अभागे चिराग अली का पेट चीर डाला और उसकी लाश दिल्ली दरवाज़े पर टाँग दी। इन्हीं हडसन साहब ने बादशाह बहादुर शाह ज़फर के दोनों बेटों शाहज़ादा फज़ल और मिर्ज़ा अबूबकर का भी खून कर उनके सिर दिल्ली दरवाज़े पर लटका दिए थे। हडसन को हिंदुस्तानियों का खून करने में बड़ा मज़ा आता था।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मेरे पड़ोस में एक गरीब औरत मेहरुन्निसा रहती हैं। उसके पति की मौत को सात साल हुए हैं। अकेली औरत। दूसरों के घर में झाड़ू लगाकर किसी तरह से अपनी गुज़र-बसर करती थी। लेकिन जब घर ही नहीं रहे, बस्ती की बस्तियाँ जला दी गईं तो मेहरुन्निसा काम न मिलने से भूखों मरने लगी। आज उसके यहाँ मैंने दस रोटियाँ पहुँचाईं। दूसरी जो दस रोटियाँ बचीं, उससे मेरे दोनों बेटों और नौकरों का काम चला। मेरे हिस्से में डेढ़ रोटी आई। फिर भी तसल्ली थी कि मेरी रोटियों से मेहरुन्निसा और उसकी दो बेटियों की भूख तो बुझी। मेरा क्या। मेरी तो भूखा रहने की आदत ही हो गई है।

'मेरी तो भूखा रहने की आदत ही हो गई है' –ग़ालिब को भूखा रहने की आदत कैसे हुई होगी?

मेरा पड़ोसी हीरासिंह एक नौजवान है। वह मुझे हिम्मत बँधाता है। इस आधे वीरान और आधे आबाद शहर में शिवजी राम भी तो हैं जो मुझसे कहते हैं कि मुसीबत के ये दिन कभी न कभी तो खत्म होंगे। उनका लड़का बालमुकुंद मुझे अपने पिता की तरह चाहता है। जब मैं बीमार पड़ा, बालमुकुंद अंग्रेज़ सिपाहियों की नज़रों से बचते-बचाते एक हकीम को मेरे पास ले आया। हकीम की दवा से मेरी जान बची। मुझे ज़िंदगी बालमुकुंद की मदद से ही वापस मिली। दूर के दोस्तों में मेरठ के हरिगोपाल 'तुफ़्ता' हैं। वे शायरी करते हैं। उन्होंने मुझे अपने घर मेरठ से नकद रुपया भेजा है। गेहूँ की कुछ बोरियाँ भी 'तुफ़्ता' के आदमी मेरे घर रख गए हैं। उन्होंने कहला भेजा है कि मैं फ़िक्र न करूँ। वे मेरी मदद हर किस्म से करते रहेंगे।

ये बातें, जिनका लिखना ज़रूरी नहीं था, सिर्फ़ इसलिए लिखी कि इन लोगों की दरियादिली और हमदर्दी का शुक्रिया अदा हो जाए। रात को चिराग नहीं जलते। दिन में चूल्हे नहीं सुलगते। जब अनाज ही नहीं है तो चूल्हे कहाँ से जलें? मकानों के मालिक मार डाले गए हैं। वे होते तो घरों में गल्ला, पानी आता। ग़ालिब, जिसके इस शहर में हज़ारों दोस्त हैं, इस तनहाई और अकेलेपन में सिर्फ़ अपनी कलम के सहारे ही ज़िंदा बचा रह गया है। उसके सारे दोस्त एक-एक कर मार डाले गए। मेरी आत्मा में अब केवल दुख ही दुख है। मैं अपना बिस्तर और कपड़े बेच-बेचकर ज़िंदगी गुज़ार रहा हूँ। दूसरे लोग जिस तरह से रोटियाँ खाते हैं, मैं कपड़े खा रहा हूँ। डरता हूँ कि जब सब कपड़े खा लूँगा, तो नंगा ही भूखा मर जाऊँगा।

'मैं कपड़े खा रहा हूँ' –इससे ग़ालिब की किस हालत की ओर संकेत है?

NT-361-3-HINDI-9

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- *ग़ालिब ने अपनी डायरी में लोगों की दरियादिली और हमदर्दी का मिसाल पेश किया है। ऐसे उदाहरण पाठ भाग में तलाशें।*

◆ *ग़ालिब*	◆ *भूखी मेहरुन्नीसा के घर रोटियाँ पहुँचाईं।*
◆ *शिवजी राम*	
◆ *बालमुकुंद*	
◆ *हरिगोपाल 'तुफ्ता'*	

- *हडसन साहब ने अभागे चिराग अली को मार दिया। इसपर एक समाचार तैयार करें।*

अनुबद्ध कार्य

- *देश की आज़ादी के पीछे बहुत बड़ा इतिहास है। स्वतंत्रता आंदोलन की ऐतिहासिक घटनाओं पर विशेषांक तैयार करें।*

◆ **संबंध पहचानें :**

मेरा पड़ोसी **हीरासिंह** एक नौजवान है। **वह** मुझे हिम्मत बँधाता है।

- रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें।
- इनके बीच का संबंध पहचानें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यह कार्य करें :

- तालिका के वाक्यों का विश्लेषण करें।
- वाक्यों में प्रयुक्त सर्वनामों को पहचानें।
- इन सर्वनामों से संबंधित संज्ञाओं को पाठ भाग से चुन लें।
- तालिका की पूर्ति करें।

वाक्य	सर्वनाम	संज्ञा
• उन्होंने गरीबों के घर भी जला दिए।		
• अपनी-अपनी जान बचाकर वे भाग निकले।		

मिर्ज़ा असद-उल्ला बेग खान 'ग़ालिब'

27 दिसंबर 1796 को उत्तर प्रदेश के आगरा में जन्म। उर्दू एवं फ़ारसी के महान शायर। मुगल काल के आखिरी शासक बहादुर शाह ज़फ़र के दरबारी कवि। 15 फरवरी 1869 को दिल्ली में मृत्यु।

दस्तंबू

सन् 1857 में भारत की पहली जनक्रांति हुई। हज़ारों निर्दोष व्यक्तियों को आज़ादी की इस लड़ाई में अंग्रेज़ों ने मार डाला। गालिब उन दिनों दिल्ली में थे। अंग्रेज़ों के अत्याचारों को खुद उन्होंने देखा। तब उन्होंने एक डायरी लिखी थी 'दस्तंबू'। दस्तंबू में ग़ालिब ने 1857 में दिल्ली का हाल लिखा है। इसमें साधारण आदमी की मुसीबत और भूख तथा प्यास से तड़पते लोगों का भी ज़िक्र है। यह पाठ भाग 'दस्तंबू' से लिया गया है।

डॉ.कैलाश नारद

जन्म : 5 मई 1941 मध्यप्रदेश के जबलपुर में। साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में मशहूर व्यक्तित्व। आज़ाद भारत के अलावा उनके लेखों में परतंत्र भारत की भी तस्वीरें उकेरी गई हैं जिन्हें हमेशा ही ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना गया। प्रमुख रचनाएँ : अंधेरा, कितने फासलों तक, मरी हुई शताब्दी, एक खुशबू उठी सी, मध्यप्रदेश में हिंदी पत्रकारिता का इतिहास आदि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

“आनेवाली पीढ़ियाँ बड़ी कठिनाई से विश्वास करेगी कि इस प्रकार का कोई रक्त-मांसवाला पुरुष इस दुनिया में जीवित रहा था।”

आल्बर्ट आइनस्टीन के इस कथन पर आपका विचार क्या है?

लेख

4E5Y8Z

गांधीजी गांधीजी कैसे बने

स्वयंप्रकाश

क्या तुम एक ऐसे गांधीजी की कल्पना कर सकते हो जिन्होंने कुरता-पाजामा पहन रखा हो, जिनके पाँव में चप्पल और सर पर खूब सारे बाल और उनपर गांधी टोपी हो और जिन्होंने बच्चों के स्कूल बैग की तरह गले में झोला टाँग रखा हो! हाँ, गांधीजी जैसे फोटो में दिखते हैं वैसे हमेशा से नहीं थे। वे धीरे-धीरे गांधी बने। कैसे?

‘वे धीरे-धीरे गांधी बने’ इसका मतलब क्या है?

बचपन में गांधीजी को अंधेरे से डर लगता था। उन्हें लगता था कोई भूत आकर उन्हें पकड़ लेगा। बड़े होकर वे खुद ऐसे हो गए कि अंग्रेज़ हुकूमत उनसे डरने लगी– मानों वे कोई भूत हों! जब उन्हें काठियावाड़ हाई स्कूल में पहली कक्षा में भर्ती कराया गया तब उनकी उम्र थी ग्यारह साल और उन्हें जो विषय पढ़ाए जाते थे वे थे– इतिहास, भूगोल, गणित और अंग्रेज़ी। स्कूल की फीस थी आठ आने प्रति माह यानी पचास पैसे हर महीने। पहली परीक्षा में गांधीजी चौंतीस बच्चों में से बत्तीसवें स्थान पर रहे। और दो विषयों में तो उन्हें ज़ीरो मिला।

इंग्लैंड पढ़ने गए तो उनके लिए खूब सारे कपड़े सिलवाए गए। दक्षिण अफ्रीका में कुरता-धोती पहनने लगे और भारत आए तो एक बार मदुरै

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गए भाषण देने। वहाँ एक औरत को देखा जो तालाब में अपनी धोती धो रही थी। लेकिन कैसे? आधी पहनती थी और बाकी आधी धोती थी। फिर धुली हुई को पहन लेती थी और शेष को धोती थी। उसकी हालत देखकर गांधीजी भीतर तक हिल गए और बस उसी समय उन्होंने फ़ैसला कर लिया कि अब सिर्फ़ एक धोती ही पहनूँगा। बाद में गोल मेज़ सम्मेलन के लिए लंदन गए। वहाँ तो खूब सर्दी पड़ती है... तो वहाँ के बच्चे पूछते थे, "बाबा! तुम्हारी पतलून कहाँ गई?" गांधीजी उन्हें कोई जवाब नहीं देते थे, बस हँसकर रह जाते थे। लेकिन जब रानी से मिलने गए तो रानी के दरबार में ऐसे जाना तो अदब-कायदे के खिलाफ़ था। तो किसीने पूछा कि इतने कम कपड़ों में दरबार में कैसे जाओगे? तो बोले, "फिकर मत करो! तुम्हारे राजा ने हम दोनों के बराबर कपड़े अकेले ही पहन रखे होंगे।"

औरत की हालत देखकर गांधीजी ने एक धोती ही पहनने का फैसला कर लिया। ऐसा फैसला लेने का उद्‌देश्य क्या था?

गांधीजी लिखते थे एक बढ़िया पैन से। वह पैन एक दिन चोरी चला गया। लिखने बैठे और पाया कि पैन तो है ही नहीं। उसी समय एक बच्चे ने अपनी पेंसिल दे दी कि लो बाबा इससे लिख लो! उन्होंने लिखकर देखा कि अरे वाह! इससे तो अच्छा लिखा जाता है और स्याही वगैरह भरने का झंझट भी नहीं! तो तय कर लिया कि अब पेंसिल से ही लिखेंगे। और पेंसिल से उन्होंने पहली चिट्‌ठी किसे लिखी जानते हो? भारत के वायसरॉय को!

लिखते-लिखते पेंसिल छोटी हो जाती तो उसपर कागज़ की भोंगली लगाकर धागे से बाँध लेते! दरअसल इन सबके पीछे कोई सनक नहीं बल्कि गांधीजी की यह सोच थी कि जब आपके देश के अधिकांश लोग गरीब हों तो आपको फिज़ूलखर्ची और दिखावा नहीं करना चाहिए। अगर आप सचमुच अपने देश और देशवासियों से प्यार करते हैं तो आपको कम से कम में काम चलाना चाहिए। और सादगी का महत्व समझना चाहिए। आप बड़े बनेंगे और कहलाएँगे अपने विचारों से और अपने काम से, न कि

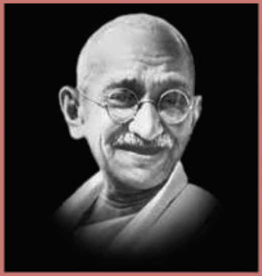

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अपने कपड़ों से। एक बार तो उनकी प्रार्थना सभा में कुछ अमीर आदमी सज-धजकर आ गए तो गांधीजी ने उन्हें डाँट दिया। जैन धर्म में भी अपरिग्रह पर काफ़ी ज़ोर दिया गया है। अपरिग्रह यानी फालतू की चीज़ें जमा मत करो! बस, गांधीजी को तो जहाँ भी कुछ अच्छा लगा, अपना लेते थे। तो उन्होंने अपरिग्रह को भी अपना लिया।

गांधीजी के तीन बंदर बहुत मशहूर हैं। यह दरअसल एक खिलौना था जो कुछ चीनी बच्चों ने गांधीजी को भेंट किया था, लेकिन गांधीजी ने उन्हें अपने जीवन का साथी बना लिया।

जब धोती पहननी शुरू कर दी तो जेब-घड़ी कहाँ रखें? तो उसे कमर में लटकाना शुरू कर दिया।

इस तरह गांधीजी धीरे-धीरे वैसे गांधीजी बन गए जैसा आजकल हम उन्हें उनके चित्रों में देखते हैं।

4EEUAH

◆ **भाषण तैयार करें :**

◆ **'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।' यह गांधीजी का कथन है। पाठ भाग के आधार पर इसका विश्लेषण करके भाषण तैयार करें।**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ये वाक्य पढ़ें :

- **औरत** तालाब में अपनी धोती धो **रही थी**।
- परीक्षा में **गांधीजी** चौंतीस बच्चों में से बत्तीसवें स्थान पर **रहे**।
- **ये लोग** कविता **करते हैं**।
- मेरे पड़ोस में एक गरीब **औरत** मेहरुन्नीसा **रहती है**।

◆ प्रत्येक वाक्य में रेखांकित शब्दों का आपसी संबंध पहचानें।

◆ तालिका के शब्दों से वाक्य बनाएँ :

तरस रही है
आएगा
सलमान
पानी
में
खेलता है
क्रिकेट
परसों
गौरव
घर
पत्र
लिखता है
आई है
अभी-अभी
रीता
के लिए
धरती
गीता
आती है

- ______________________________
- ______________________________
- ______________________________
- ______________________________
- ______________________________

स्वयंप्रकाश

20 जनवरी 1947 में मध्यप्रदेश के इंदौर में जन्म। समकालीन हिंदी साहित्य जगत में अपनी कहानियों और उपन्यासों के लिए विख्यात। प्रमुख रचनाएँ : सूरज कब निकलेगा, आएँगे अच्छे दिन भी, आदमी जात का आदमी (कहानी संग्रह); जलते जहाज़ पर, बीच में विनय, उत्तर जीवन कथा (उपन्यास)। पहल सम्मान, राजस्थान साहित्य अकादमी सम्मान, आनंद सागर कथाक्रम सम्मान आदि से सम्मानित।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दीप जलाओ

त्रिलोचन

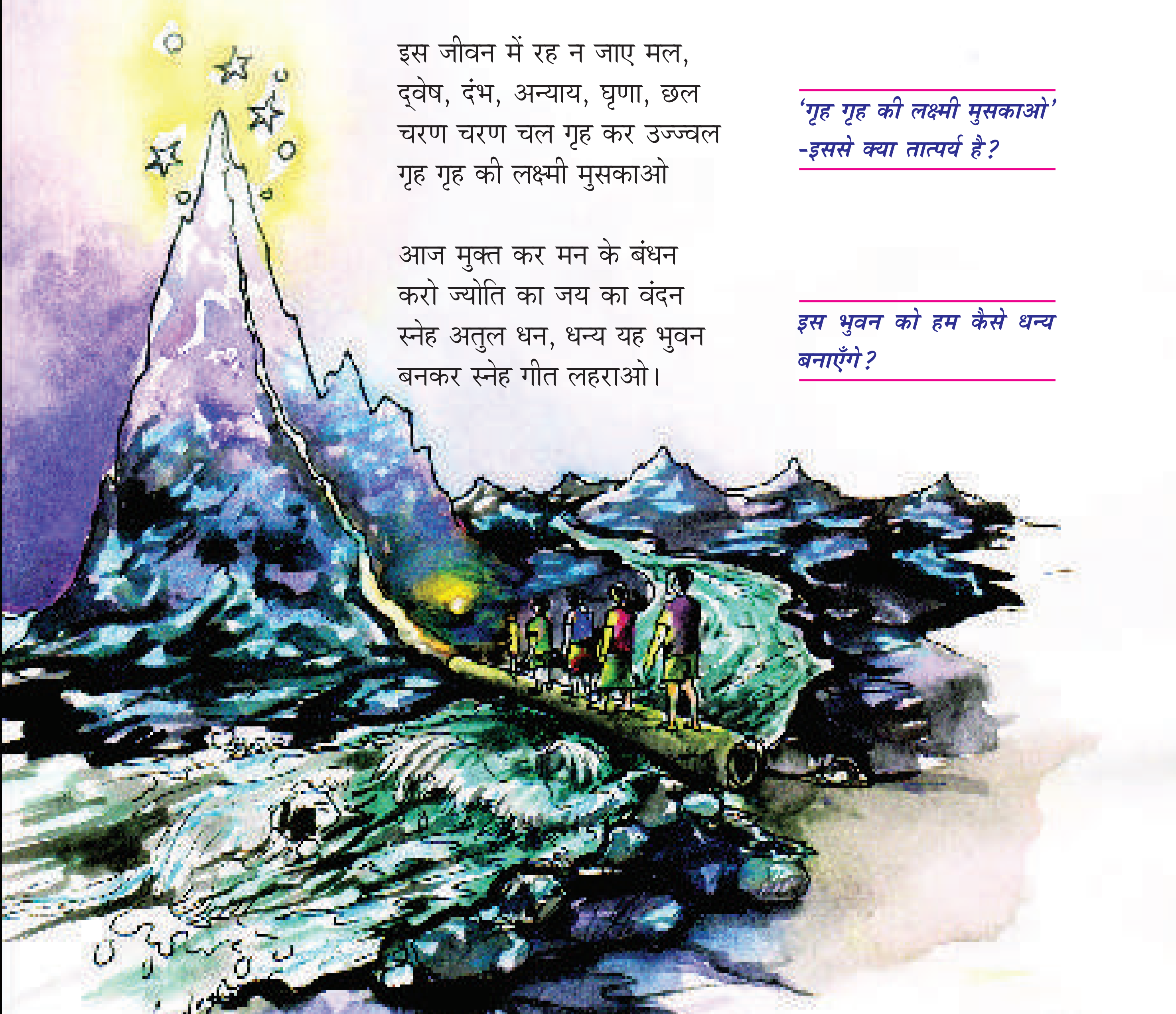

इस जीवन में रह न जाए मल,
द्वेष, दंभ, अन्याय, घृणा, छल
चरण चरण चल गृह कर उज्ज्वल
गृह गृह की लक्ष्मी मुसकाओ

आज मुक्त कर मन के बंधन
करो ज्योति का जय का वंदन
स्नेह अतुल धन, धन्य यह भुवन
बनकर स्नेह गीत लहराओ।

'गृह गृह की लक्ष्मी मुसकाओ' -इससे क्या तात्पर्य है?

इस भुवन को हम कैसे धन्य बनाएँगे?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कर्मयोग कल तक के भूलो
जीवन-सुमन सुरभि पर फूलो
छवि छवि छू लो, सुख से झूलो
जीवन की नव छवि बरसाओ

ये अनंत के लघु लघु तारे
दुर्बल अपनी ज्योति पसारे
अंधकार से कभी न हारे
प्रतिमन वही लगन सरसाओ।

यहाँ जीवन को 'सुमन' क्यों बताया गया है?

'प्रतिमन वही लगन सरसाओ' -इससे क्या तात्पर्य है?

◆ **कविता के आशय के आधार पर सही मिलान करें।**

हमें मुक्त करना है	ज्योति का
हमें वंदन करना है	मन के बंधनों को
हमें लहराना है	जीवन की नव छवि
हमें बरसानी है	स्नेह गीत बनकर

◆ **ये आशयवाली पंक्तियाँ चुनकर लिखें।**

मुक्त मन से आज जीत के प्रकाश का नमन करना है।

....

....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

◆ **हम क्या-क्या छोड़ेंगे और क्या-क्या अपनाएँगे?**

द्वेष	न्याय	अन्याय
मित्रता	घृणा	मलिनता
सचाई	विनम्रता	छल
दंभ	प्यार	स्वच्छता

छोड़ेंगे	अपनाएँगे
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

◆ **इनमें से विशेषण शब्द अलग करके लिखें।**

- अतुल धन ....
- धन्य भुवन ....
- नव छवि ....
- लघु तारे ....
- दुर्बल ज्योति ....

◆ **नमूने के अनुसार लिखें और अर्थभेद समझें।**

तुम दीप जलाओगे।	**हम दीप जलाएँगे।**	**मैं दीप जलाऊँगा।**
तुम सुख से झूलोगे।		
तुम जय का वंदन करोगे।		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संवाद चलाएँ :

- 'जीवन के संघर्षों से हार मानना कायरता है'

  इस विषय पर संवाद चलाएँ।

  कार्यक्रम की रपट तैयार करें।

- कई महान व्यक्तियों ने संघर्षों का हौसले के साथ सामना करके ज़िंदगी में सफलता पाई है। ऐसे कुछ व्यक्तियों की सूची तैयार करें और उनके कार्यक्षेत्र भी लिखें।

◆	◆ ....
◆	◆ ....
◆	◆ ....

4ENQCA

त्रिलोचन

उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर ज़िले में जन्मे त्रिलोचन शास्त्री का मूल नाम वासुदेव सिंह है। वे हिंदी साहित्य की प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। मुख्य काव्य संकलन : धरती, ताप के ताए हुए दिन, दिगंत, शब्द, उस जनपद का कवि हूँ, तुम्हें सौंपता हूँ, जीने की कला आदि। 'ताप के ताए हुए दिन' के लिए 1981 का साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1989-90 में हिंदी अकादमी का शलाका पुरस्कार आदि से सम्मानित।

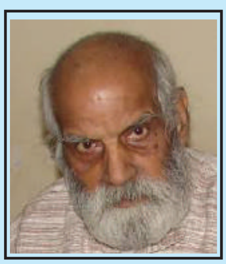

जन्म : 20 अगस्त 1917
मृत्यु : 9 सितंबर 2007

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

फूलों का शो

शिल्पी टॉस्टॉविन

दूर - दूर तक फूलों की चादर बिछी हुई थी। बेहद खूबसूरत नज़ारा था। मुझे दीवाली की याद हो आई। मैं और मेरी बहन सुबह से ही रंगोली बनाने में जुट जाते थे। कौन-सा डिज़ाइन बनाना है यह सोचना रात देर तक जगकर कर लिया जाता था। सुबह रंगोली बनाने से ही शुरू होती। आज भी वैसा ही लग रहा था। फर्क सिर्फ़ इतना था कि रंगोली हम सूखे रंगों से बनाते थे और यहाँ फूलों का इस्तेमाल किया गया था। तुम सोचोगे कि फूलों की रंगोली के बारे में लिखने जैसी क्या बात है। हाँ, इसमें सचमुच लिखने जैसी बात है। क्योंकि मैं एक छोटे-से डिज़ाइन की बात नहीं कर रही हूँ, मैं बात कर रही हूँ पुर्तगाल के अनूठे और बेहद खूबसूरत त्यौहार- फ्लावर फैस्टिवल के बारे में।

यह त्यौहार जून के महीने में मनाया जाता है। इस त्यौहार के कुछ दिन पहले से इसकी तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। जब मैं वहाँ थी तो मैंने देखा कि दो-तीन दिन पहले ट्रक में तरह-तरह के फूल और पत्तियाँ भर-भरकर लाए जा रहे हैं। और इन्हें बड़ी-बड़ी खाली दुकानों में भरा जा रहा है। फिर मछुआरों के उस छोटे-से गाँव की औरतें, बच्चे, बुज़ुर्ग और जवान, सभी फूलों की पत्तियों को तोड़कर अलग-अलग ढेर बनाने में जुट गए थे। इतने सारे फूलों और पत्तियों को तोड़कर अलग करने में आमतौर पर 2-3 दिन लग जाते हैं।

जिस दिन यह त्यौहार होता है उससे पहली रात को सभी रास्ते बंद कर दिए जाते हैं ताकि सड़कों से गाड़ियाँ आ-जा न सकें। फिर बड़े प्रेम से सड़कों पर डिज़ाइन बनाया जाता है। इसके बाद शुरू होता है बहुत सुंदर फूलों और पत्तियों से सड़कों को सजाने का सिलसिला। किस रंग के फूल के साथ किस रंग के फूल या पत्ती

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

को बिछाना है इसका चुनाव बड़ी खूबसूरती से होता है। हमारे गाँव के खास स्मारकों के डिज़ाइन बनाकर भी उन्हें सजाया जाता है। पूरी रात जश्न का-सा माहौल रहता है। कोई चाय ला रहा है तो कोई सैण्डविच... सारा गाँव एक हो जाता है। बच्चों की खासतौर पर मस्ती होती है। वे बहुत मदद तो करते ही हैं। बुज़ुर्ग महिलाओं को देखकर लगता है जैसे उमर इनको ज़रा भी धीरे नहीं कर पाएगी। बड़े ही जोश के साथ इन के हाथ चलते हैं। शाम को जुलूस निकाला जाता है जिसमें घोड़ों पर जवान, चर्च के पादरी और बच्चे उन फूलों के ऊपर से निकलते हुए जाते हैं। फिर सभी लोग उन फूलों को एक-दूसरे पर उछालकर त्यौहार के सफल होने की खुशियाँ मनाते हैं। इस त्यौहार को मनाने की कहानी कुछ यूँ बताई जाती है–

बहुत समय पहले की बात है। तब पुर्तगाली सेना एक बहुत महत्वपूर्ण युद्ध के लिए तैयार हो रही थी। सभी जवान अपनी बंदूकें लिए कतार में खड़े थे। तभी एक बूढ़ी औरत अपनी फूलों की टोकरी के साथ वहाँ से निकली। वह सभी जवानों की बंदूकों के मुँह में एक-एक गुलाब का फूल यह कहकर डालने लगी कि हमें युद्ध नहीं शांति चाहिए। बस तभी से इस दिन को फूलों के त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। इसे देखने हज़ारों लोग दूर-दूर से आते हैं।

4EXLDX

■ ***किसी एक त्योहार की ऐतिहासिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर लेख लिखें।***

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मदद लें...

जिस गली में मैं रहता हूँ

भगदड़	- പരിഭ്രമിച്ചുള്ള ഓട്ടം stampede படபடப்புடன் ஓடுதல் ಹೆದರಿದ ಓಟ
आहिस्ता-आहिस्ता	- slowly மெதுவாக மெதுவாக ನಿಧಾನವಾಗಿ
बर्दाश्त करना	- സഹിക്കുക to endure பொறுத்துக் கொள் ಸಹಿಸು
शोरा बारूद	- വെടിമരുന്ന് gun powder வெடிமருந்து ಪಟಾಕಿ
ज़हरीला	- വിഷം കലർന്ന poisonous விஷம் கலந்த ವಿಷಮಿಶ್ರಿತ
घुसना	- प्रवेश करना
पेश करना	- ഹാജരാക്കുക to present ஆஜராகுதல் ಹಾಜರುಪಡಿಸು
सुर्ख	- ചുവന്ന red coloured சிவந்த ಕೆಂಪುಬಣ್ಣದ
हामी भरना	- സമ്മതിക്കുക to agree சம்மதித்தல் ಒಪ್ಪು
इज्ज़त	- आदर ആദരവ് respect ஆதரவு ಗೌರವ
बेहद	- അത്യധികമായ/അതിരറ്റ excessive பெரும்/மேலும் அளவற்ற ಅಧಿಕ
रिहा करना	- മോചിപ്പിക്കുക to release விடுதலை அடையச்செய் ಸ್ವತಂತ್ರಗೊಳಿಸು
इज़ाज़त	- അനുമതി consent அனுமதி ಅನುಮತಿ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हवालात	-	തടവ് custody சிறைப்படுத்துதல் ಸೆರೆ
कैदखाना	-	ജയിൽ Jail சிறைச்சாலை ಕಾರಾಗೃಹ
बेशुमार	-	അസംഖ്യം countless எண்ணற்றாத ಅಸಂಖ್ಯ
बेगुनाह	-	നിരപരാധിയായ innocent களங்கமற்ற ನಿರಪರಾಧಿಯಾದ
ठूँसना	-	തിക്കി നിറയ്ക്കുക to cram அமுக்கித் திணிப்பது ತುಂಬಿತುಳುಕಿ
कदर	-	അളവ് quantity அளவு ಪ್ರಮಾಣ
हक़ीम	-	വൈദ്യൻ Physician மருத்துவர் ವೈದ್ಯ
हाकिम	-	हुकुमत करनेवाला व्यक्ति
समाना	-	നിറയുക to be filled நிரம்புதல் ತುಂಬಿ
खुशकिस्मत	-	സൗഭാഗ്യമുള്ള lucky அதிர்ஷ்டமுள்ள ಸೌಭಾಗ್ಯವಿರುವ
भिश्ती	-	വെള്ളംചുമക്കുന്നവൻ a water carrier தண்ணீர் எடுப்பவன் ನೀರನ್ನುಹೊರುವುವ
नहर	-	തോട് canal வாய்க்கால் ತೋಡು
मशक	-	വെള്ളമെടുക്കാനുള്ള തുകൽ സഞ്ചി A large leather water bag தண்ணீர் எடுப்பதற்கான தோல் பை ನೀರನ್ನು ತುಂಬಿಸುವ ಚರ್ಮದ ಚೀಲ
गुज़र-बसर करना	-	നിത്യവൃത്തി കഴിയുക/ഉപജീവനം നടത്തുക to subsist அன்றாடப் பிழைப்பு ಉಪಜೀವನವನ್ನು ನಡೆಸು
तसल्ली	-	ആശ്വാസം/തൃപ്തി satisfaction மனநிறைவு ತೃಪ್ತಿ
हिम्मत बाँधना	-	ധൈര്യം സംഭരിക്കുക to muster courage தைரியம் அடை ಧೈರ್ಯತುಂಬುವುದು

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शायरी करना	- കവിത രചിക്കുക versification காவியப்படைப்பு ಕವಿತಾರಚನೆ
फिक्र	- വേവലാതി anxiety சிந்தனை ಚಿಂತೆ
किस्म	- തരം kind வகை ರೀತಿ
दरियादिली	- കാരുണ്യം mercy கருணை ದಯೆ
हमदर्दी	- സഹതാപം sympathy இரக்கம் ಅನುಕಂಪ
सुलगना	- തീ കത്തുക to begin to burn தீ பிடித்தல் ಬೆಂಕಿಹಿಡಿಯು
तनहाई	- ഏകാന്തത loneliness தனிமை ಏಕಾಂತತೆ
गल्ला	- ധാന്യം grain தானியம் ಧಾನ್ಯ

गांधीजी गांधीजी कैसे बने

अदब-कायदे	- शिष्ट व्यवहार (മര്യാദ) மரியாதை ಮರ್ಯಾದೆ
अपरिग्रह	- आवश्यकता से अधिक दान स्वीकार न करना
खिलाफ़	- എതിര് against எதிர் ವಿರೋಧ
धुली	- കഴുകിയ washed துவைக்கக்கூடிய ತೊಳೆಯು
झंझट	- तकलीफ़
झोला	- थैला സഞ്ചി bag பை ಚೀಲ
डाँट	- ശകാരം scolding திட்டு ದೂಷಿಸು
धागा	- thread ചരട്, നൂൽ கயிறு, நூல் ನೂಲು
पतलून	- pants கால் சட்டை
फालतू	- बेकार
फिकर	- ചിന്ത worry சிந்தனை ಚಿಂತನೆ
फिजूलखर्ची	अधिक या व्यर्थ का खर्च

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भर्ती	- പ്രവേശനം admission அனுமதி ಪ್ರವೇಶಾತಿ
भूगोल	- ऐसा शास्त्र जिसमें पृथ्वी तल के ऊपरी स्वरूप का अध्ययन हो ഭൂമിശാസ്ത്രം geography புவியியல் ಭೌಗೋಳಶಾಸ್ತ್ರ
कागज़ की भोंगली	- roll of paper
सज-धजकर	- सजावट, बनाव-शृंगार
लटकाना	- തൂക്കിയിടുക to hang தொங்கவிடு ತೂಗು ಹಾಕು
सनक	- पागलपन
सादगी	- ലാളിത്യം simplicity எளிமை ಸರಳತೆ
सिलाना	- തയ്പ്പിക്കുക to cause to be stitched
स्याही	- ink മഷി மை ಶಾಯಿ
हुकूमत	- शासन ഭരണം rule ஆட்சி ಆಡಳಿತ

दीप जलाओ

घृणा	- വെറുപ്പ് contempt வெறுப்பு ದ್ವೇಷ
छल	- വഞ്ചന cheating வஞ்சனை ಮೋಸ
छवि	- शोभा
ज्योति पसारना	- प्रकाश फैलाना
दंभ	- अहंकार
द्‌वेष	- शत्रुता
भुवन	- संसार
मल	- मलिनता മാലിന്യം dirt கழிவு ಮಾಲಿನ್ಯ
लगन	- प्रयत्न
सरसाना	- सुंदर बनाना, रसपूर्ण करना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

फूलों का शो

बेहद	- असीम
नज़ारा	- दृश्य
जुट जाना	- മുഴുകുക to be involved முழுகுதல் ಮುಳುಗು
अनूठा	- विचित्र
पुर्तगाल	- Portugal
जश्न	- ഉത്സവം festival திருவிழா ಜಾತ್ರೆ
खास तौर पर	- വിശേഷിച്ചും/പ്രത്യേകിച്ചും expecially முக்கியத்துவம் வாய்ந்த / தனிப்பட்ட ವಿಶೇಷವಾಗಿ
उमर	- उम्र age வயது ಪ್ರಾಯ
उछालना	- വലിച്ചെറിയുക to throw up தூக்கி எறி ಬಿಸಾಡು

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इकाई 3

मज़बूरी

एक दावत में मुल्ला नसीरुद्दीन दोनों हाथों से खाना खा रहा था। किसीने टोका, "मुल्ला, यह क्या कर रहे हो? दोनों हाथों से खा रहे हो?"

"तीसरा हाथ जो नहीं है।" मुल्ला ने जवाब दिया।

- जीने के लिए कितने हाथों की ज़रूरत है?
- क्या कभी सोचा है जो बिना हाथ जीने को मज़बूर हैं?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नंगे पैर

4F7HFK

वेंकटेश माडगुलकर

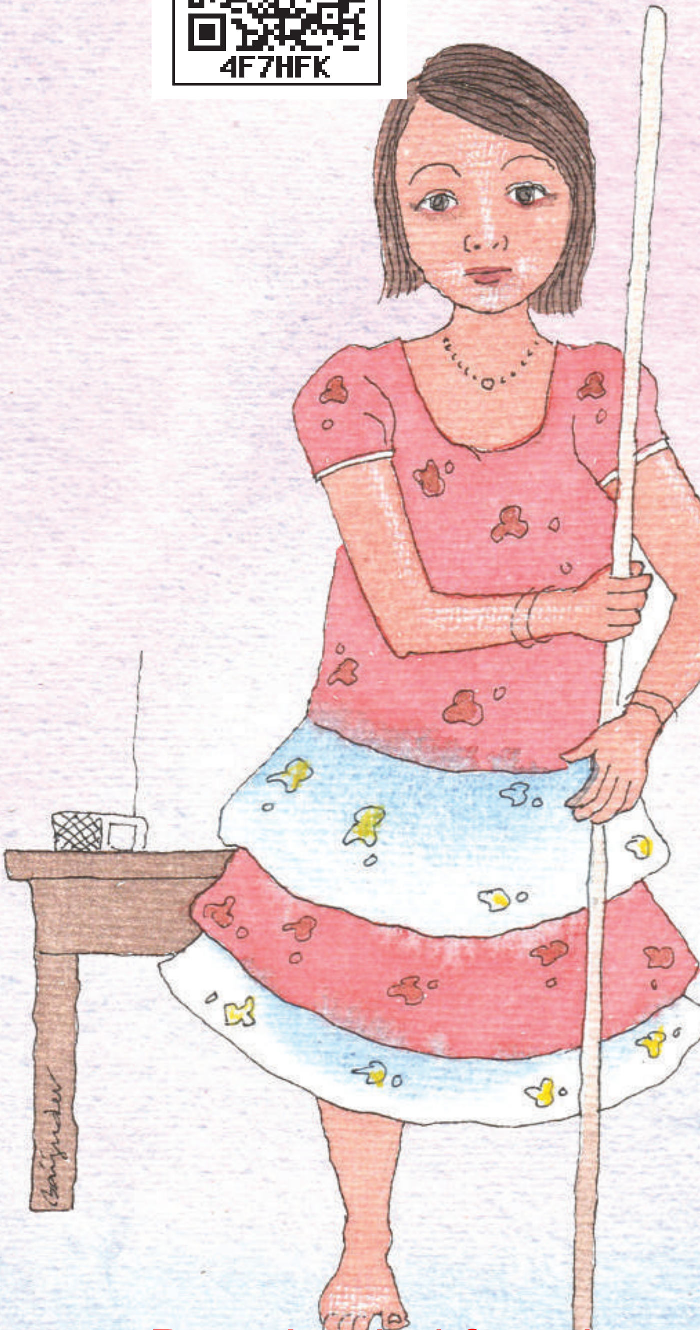

दोपहर का समय था। बेबी अपने पलंग पर बैठी खिड़की से बाहर देख रही थी। बीच हॉल में रखे रेडियो में साढ़े बारह बजे के रिकॉर्ड बज रहे थे। शांत माहौल में गीतों के सुर गूँज रहे थे। सामने का बंद फाटक खोलकर पोस्टमैन भीतर आया। अहाते की बजरी पर उसकी आहट सुनाई दी। पोस्टमैन की आवाज़ उसके कानों में आई, पर फर्श पर डाक के गिरने की आवाज़ सुनाई नहीं दी। बेबी पीछे मुड़ी। सँभलकर पलंग से उतरी। फिर बैसाखियों के सहारे एक-एक कदम चलकर दरवाज़े तक आई। बंद दरवाज़ा खोलने में उसे थोड़ा समय लगा। दरवाज़े से बाहर और हॉल को पारकर आगे आने में देर लगी। वह दरवाज़े पर पहुँची। वहाँ हाथ में डाक लिए पोस्टमैन खड़ा था। फर्श पर डाक फेंककर अभी गया नहीं था।

'बंद दरवाज़ा खोलने में उसे थोड़ा समय लगा। दरवाज़े से बाहर और हॉल को पारकर आगे आने में देर लगी।' देर लगने का क्या कारण है?

सीढ़ियों के ऊपर होकर उसने हाथ बढ़ाया। उसने ध्यान दिया कि आज पोस्टमैन दूसरा ही है। सदा का वह दाढ़ी वाला पोस्टमैन नहीं है। बच्चों के से चेहरे वाला यह नया पोस्टमैन है।

उसने एक नज़र बेबी के पैरों की ओर देखा। उसे शायद धक्का-सा लगा। उसने डाक बेबी के हाथ में दे दी। बूढ़े पोस्टमैन की तरह इस पोस्टमैन ने उससे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कोई बात न की। माँ के हाथ में डाक देकर बेबी पीछे की ओर मुड़ी और बड़ी कुर्सी पर बैठकर बोली, "माँ, आज का पोस्टमैन नया था।"

"तो, इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है? बदल गया होगा।"

बेबी की माँ ने बालमित्र का नया अंक बेबी के आंचल में रखा। फिर रेडियो बंद करके वह अपने कमरे में चली गई। दोपहर में बेबी को हमेशा अकेलापन लगता। वह किसके साथ बात करे? किसके साथ हँसे? यह प्रश्न सदा ही बना रहता। ऐसे ही समय में वह बूढ़ा पोस्टमैन आ जाया करता। वह हमेशा ही जल्दी में रहता, फिर भी कभी-कभी खिड़की तक जाकर डाक देता। कोई न कोई परिचित आया देखकर बेबी को अच्छा लगता।

'दोपहर में बेबी को अकेलापन लगता...' बेबी बाहर निकल न पाती। जो अकेलापन सहते हैं, वे हमसे क्या-क्या चाहते होंगे?

इसके बाद तीसरे दिन फिर पोस्टमैन की आवाज़ आई। डाक गिरने की आवाज़ नहीं सुनाई दी। चलती हुई बेबी अहाते में आई। पोस्टमैन अभी खड़ा था। बेबी की ओर देखकर वह मुस्कराया। बेबी भी हँसी। डाक लेकर बेबी ने पूछा, "क्या तुम नए पोस्टमैन हो?"

"जी, हाँ।"

"डाक फेंककर तुम चले जाया करो। मुझे आने में देर लगती है।"

पोस्टमैन ने बेबी के पैरों की ओर देखा और देर तक मौन रहा। इस लड़की को भगवान ने पैर क्यों नहीं दिए? ऐसा शायद उसे लगा होगा। वह कुछ बोला नहीं, पर उसकी आँखों से कुछ यही भाव झलका।

उसने बहुत ही कोमल तथा दबी आवाज़ में कहा, "लगने दो बहिन! पोस्टमैन का काम जिस-तिस की डाक को जिस-तिस के हाथ में सौंपने का है- अहाते में फेंकने का नहीं!"

'लगने दो बहिन! पोस्टमैन का काम जिस-तिस की डाक को जिस-तिस के हाथ में सौंपने का है- अहाते में फेंकने का नहीं!' यहाँ कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वह बोल रहा था, तब बेबी ने उसके पैरों की ओर देखा। कितने मज़बूत और गोल-गोल... इस पोस्टमैन के पैर कितने अच्छे थे। अचानक बेबी के ध्यान में आया कि ये अच्छे पैर नंगे हैं। इसने पैरों में कुछ पहना क्यों नहीं?

पोस्टमैन लौट गया। सुंदर पग धरते हुए चला गया। बेबी ने सोचा कि कदाचित उसके जूते फट गए होंगे, वे मरम्मत होकर आते होंगे।

थोड़ी देर के लिए ही सही, इस तर्क से बेबी को अच्छा लगा। डाक लेकर वह कुर्सी पर बैठ गई। पोस्टमैन के नंगे पैर उसके मन से धीरे-धीरे चले गए।

जाड़ा गया और गर्मी आई। धूप कुछ तेज़ पड़ने लगी थी। कोलतार की सड़क तपने लगी थी। पर पोस्टमैन आता। उसके पास छाता नहीं, साइकिल नहीं और जूता भी नहीं था। धूप से उसका चेहरा लाल-पीला होता। पसीने से उसकी कमीज़ पीठ से चिपकी रहती। सूखे अधरों पर वह ज़बान फिराकर लजीली हँसी हँसता और डाक देकर लौट जाता, धूप से जलते, नंगे पैर घूमता रहता।

उसने माँ से पूछा, "माँ, वह पोस्टमैन नंगे पैर ही क्यों घूमता है?"

माँ ने कहा, "चैन से कोई नंगे पैर घूमेगा, बेटी? पैरों में डालने के लिए उसे मिलता न होगा।"

बेबी ने मन ही मन निश्चय किया कि वह उस पोस्टमैन को नंगे पैर चलने नहीं देगी। यह तय करते ही उसे सुखद अनुभूति हुई।

'बेबी ने मन ही मन निश्चय किया कि वह उस पोस्टमैन को नंगे पैर चलने नहीं देगी। यह तय करते ही उसे सुखद अनुभूति हुई' - -कारण क्या होगा?

हमेशा आने वाला मोची जब घर आया, तब बेबी ने उसे पास बुलाया और पाँच रुपया उसके हाथ में देकर धीमी आवाज़ में कहा, "मुझे इसके जूते बना दो।"

हरीबा ने सिर हिलाकर कहा, "बना दूँगा, बहिन! नाप ले लूँ?" वह बोली, "अरे मेरे पैर का नहीं।" "फिर किसके लिए?" हरीबा ने पूछा।

इस प्रश्न को सुनकर बेबी एक उलझन में पड़ गई। उसको लगा कि मानो अब सारा खेल बिगड़ने जा रहा था। अंत में, प्रतीक्षा करते हुए मोची से उसने कहा, "दो दिन के बाद आओ,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हरीबा! मैं माप दूँगी।"

दूसरे दिन पोस्टमैन आया और थोड़ी देर तक एक-एक कर डाक देकर चला गया। डाक को कुर्सी पर रखकर बेबी अहाते के किनारे आई और सीढ़ियों से नीचे उतर गई। फिर फ्रॉक की जेब से परकार निकालकर जाने वाले पोस्टमैन के पैरों के निशान का नापजोख किया। पैरों की गोलाई आदि का ठीक-ठीक माप। माप लेकर वह फिर कमरे में आ गई।

हरीबा मोची को काम मिला। उसने हिसाब से जूते तैयार किए और बेबी को लाकर दे दिए। तब होली का त्यौहार मनाया जा चुका था। दोपहर को पोस्टमैन कब आएगा, इसकी प्रतीक्षा करती हुई बेबी बैठ गई।

'तब होली का त्योहार मनाया जा चुका था।' -इस प्रस्ताव का तात्पर्य क्या है?

दोपहर को पोस्टमैन आया और बेबी के आने की राह देखने लगा। धीरे-धीरे बेबी आई और पुराने अखबार में लिपटा एक बंडल लेकर अहाते में खड़ी हो गई।

हमेशा की तरह वह मुस्कराया और पत्रों का गट्ठा उसने बेबी के हाथ में दे दिया।

बेबी ने टोका, "अजी, तुमने होली का उपहार नहीं माँगा।" पोस्टमैन ने कहा, "माँगूँगा बहिनजी, साहब से भेंट नहीं हो रही है।" यह सुनते-सुनते बेबी ने पोस्टमैन के हाथ में जूते का बंडल थमा दिया। अचरज से सकपकाकर उसने बंडल खोला। भीतर एक जोड़ी सुंदर जूते थे। पोस्टमैन मन ही मन कह उठा, "इस बच्ची ने तो मुझ नंगे पैर को जूते दिए। उसके पैर नहीं हैं, वो मैं कैसे दे सकूँगा?"

काम खत्म करके वह सीधा पोस्ट ऑफिस गया। बड़े बाबू के टेबल के सामने जाकर बोला, "साहब मेरी लाइन बदल दीजिए, सिटी में कहीं भी बदली कर दीजिए।"

'साहब मेरी लाइन बदल दीजिए, सिटी में कहीं भी बदली कर दीजिए' -ऐसा क्यों कहा होगा?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

◆ 'पोस्टमैन की आवाज़ उसके कानों में आई, पर फर्श पर डाक गिरने की आवाज़ सुनाई नहीं दी। बेबी पीछे मुड़ी। सँभलकर पलंग से उतरी। फिर बैसाखियों के सहारे एक-एक कदम चलकर दरवाज़े तक आई।'

◆ **बेबी हर बात का सूक्ष्म निरीक्षण करती है। उसके मुताबिक व्यवहार भी करती है।**

जैसे,

पोस्टमैन की आवाज़ उसके कानों में आई, पर डाक के गिरने की आवाज़ सुनाई नहीं दी।	बेबी बैसाखियों के सहारे दरवाज़े तक आई।

◆ **लिखें, इनपर आपकी प्रतिक्रिया।**

◆ रसोई से खाने की महक आ रही है।	....
◆ दस्तक देने की आवाज़ आ रही है।	....
◆ स्कूल में घंटी लंबी बज रही है।	....
◆ बादलों के गरजने की आवाज़ आ रही है।	....
◆ कोई दोस्त पुकार रहा है।	....

◆ **डायरी लिखें :**

◆ *'बेबी ने मन ही मन निश्चय किया कि वह उस पोस्टमैन को नंगे पैर चलने नहीं देगी। यह तय करते ही उसे सुखद अनुभूति हुई।'* **सोचें, उस दिन बेबी के मन में कौन-कौन-से विचार आए होंगे? बेबी के विचारों को डायरी के रूप में लिखें।**

◆ **टिप्पणी लिखें :**

◆ 'नंगे पैर' शीर्षक इस कहानी के लिए कहाँ तक सार्थक है? अपना मत स्पष्ट करते हुए एक टिप्पणी लिखें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

◆ **इस वाक्य पर ध्यान दें–**

*'पैरों की **गोलाई** आदि का ठीक-ठीक माप।'*

◆ इसमें 'गोलाई' शब्द 'गोल' और 'आई' के मेल से बना है। ध्यान दें, इससे अर्थ में कौन-सा परिवर्तन आता है। इस तालिका में इसी प्रकार के और कुछ शब्दों को जोड़ें।

विशेषण	प्रत्यय	संज्ञा
गोल	आई	गोलाई
चतुर	आई	....
सुंदर	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

◆ **सोचें...**

- 'नंगे पैर' कहानी की बेबी घर के अकेलेपन में रहने को क्यों मज़बूर है?
- इसी कहानी का नया पोस्टमैन क्यों नंगे पैर चलता है?
- अपनी विवशताओं के प्रति हमारा दृष्टिकोण कैसा होना चाहिए?

वेंकटेश माडगुलकर

प्रमुख मराठी रचनाकार। देहाती जीवन के यथार्थपरक लेखन केलिए विख्यात। आठ उपन्यासों, दो सौ से अधिक कहानियों, चालीसों से ज़्यादा पटकथाओं, कुछ लोकनाट्यों तथा यात्राविवरणों से संपन्न है आपका रचना-संसार। प्रमुख रचनाएँ हैं– माणदेशी माणसे, बानगरवाड़ी आदि। आपकी मुख्य रचनाओं का अनुवाद अंग्रेज़ी, जर्मन तथा एकाधिक भारतीय भाषाओं में हुआ है।

जन्म : 1927, माड़गुल गाँव महाराष्ट्र
मृत्यु : 2001

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कविता

तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार
आज सिंधु ने विष उगला है
लहरों का यौवन मचला है
आज हृदय में और सिंधु में
साथ उठा है ज्वार
तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार।

'तूफ़ानों की ओर घुमा दो' -से क्या तात्पर्य है?

लहरों के स्वर में कुछ बोलो
इस अंधड़ में साहस तोलो
कभी-कभी मिलता जीवन में
तूफ़ानों का प्यार
तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार।

'कभी-कभी मिलता जीवन में तूफ़ानों का प्यार' -से आपने क्या समझा?

यह असीम, निज सीमा जाने
सागर भी तो यह पहचाने
मिट्टी के पुतले मानव ने
कभी न मानी हार
तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार।

'मिट्टी के पुतले मानव ने कभी न मानी हार'
इन पंक्तियों द्वारा कवि क्या बताना चाहते हैं?

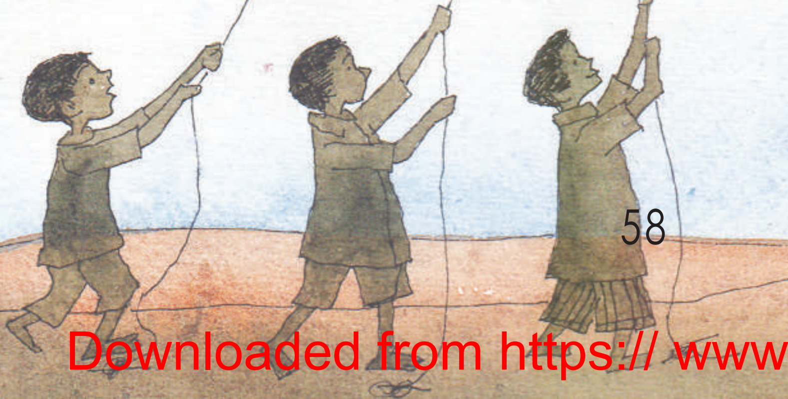

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सागर की अपनी क्षमता है
पर मांझी भी कब थकता है
जब तक साँसों में स्पंदन है
उसका हाथ नहीं रुकता है
इसके ही बल पर कर डाले
सातों सागर पार
तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार।

'सागर की अपनी क्षमता है पर मांझी भी कब थकता है' यहाँ 'मांझी' किसकी ओर संकेत करता है?

◆ **समान आशयवाली पंक्तियाँ चुनकर लिखें।**

- जीवन में कभी-कभी संकट रूपी तुफ़ान का सामना करना पड़ता है।
- असीम सागर की क्षमताओं की भी सीमा होती है।
- मनुष्य ने अपनी ताकत के बल पर असंभव को संभव बनाया है।
- मानव अंतिम साँस तक समस्याओं से लड़ते रहते हैं।

◆ **कविता सुनें।**

4FGDH8

◆ **'तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक' कविता का भाव लिखें।**

◆ **कविता की पंक्तियाँ विशेष ताल-क्रम में हैं। इसी ताल-क्रम में कुछ पंक्तियाँ रचें। अपनी रचना विशेषांक में जोड़ें।**

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

जन्म : 5 अगस्त 1915 मृत्यु : 27 नवंबर - 2002

हिंदी साहित्य के अग्रणी प्रगतिशील कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में हुआ था। इनका कार्यक्षेत्र अधिकांशतः शिक्षा जगत से संबद्ध रहा। सुमन जी प्रिय अध्यापक, कुशल प्रशासक और प्रखर चिंतक थे। प्रमुख रचनाएँ: हिल्लोल, जीवन के गान, युग का मोल, मिट्टी की बारात (काव्य संग्रह); महादेवी की काव्य साधना, गीति काव्य: उद्‌यम और विकास। पुरस्कार : साहित्य अकादमी पुरस्कार, पद्‌मश्री, पद्‌म भूषण आदि...

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

व्यंग्य लेख

अतिरिक्त वाचन के लिए

अंदर के और बाहर के

विंदा करंदीकर

मुझे अब ऐसा लगता है कि आदमी की असल में दो ही जातियाँ हैं: 'अंदर के' और 'बाहर के'। इस विचार की हलचल मेरे मन में बीते कितने महीनों से चल रही थी। पर परसों ट्रेन से पूना से आते समय जो मार्मिक अनुभव मुझे हुआ उससे यह स्पष्ट हो गया।

स्टेशन पहूँचने की मुझे जल्दी थी। पहले ही देर हो गई थी। पर मैं अंदर घुसूँ इससे पहले गाड़ी की सीटी की ज़ोरदार आवाज़ हुई। ऐसे वक्त अपने मन की स्थिति बड़ी अजीब होती है। सीटी किसी भी गाड़ी की क्यों न हो लगता है जैसे अपनी ही गाड़ी की है। पैरों में जूते होने से दौड़ना भी आसान न था। ऐसे में लगभग दौड़ने जैसा तेज़-तेज़ चलते हुए मैंने ट्रेन का दरवाज़ा पकड़ा। मैं उसे खोलने की कोशिश करूँ इससे पहले अंदर के लोगों का शोर हुआ, "अरे साहब! यह सेकंड का डब्बा है। आगे जाओ।"

मज़ेदार बात है ना– अंदर के लोगों को बाहर के सारे लोग थर्ड क्लास के ही लगते हैं।

इतने में दूसरा बोला, "अरे, अगले डिब्बे में इतनी जगह है। पूरा खाली है। फिर यहाँ क्यों घुसे आ रहे हो? अगला डिब्बा पूरा खाली है! उधर जाओ।" अंदर के लोगों को खुद का डिब्बा छोड़कर बाकी सब अगले डिब्बे हमेशा खाली दिखते हैं!

पर उसी दरवाज़े से चिपके रहने के सिवा मेरे पास कोई और चारा न था। मैं दरवाज़ा खोलने

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

की कोशिश कर रहा था और 'अंदर के' लोग मेरा विरोध कर रहे थे। उनकी भी गलती न थी। गाड़ी में भयानक भीड़ थी। दरवाज़ा खोलना तक मुश्किल था। ऐसे में दरवाज़े से चिपककर खड़े एक लंबे-चौड़े आदमी ने द्‌वारपाल का काम पूरी निष्ठा से निभा रखा था। अंदर के लोग उसकी तारीफ़ कर रहे थे। इससे उसमें विजेता होने के भाव आ रहे थे।

आखिरकार दरवाज़े का मोर्चा छोड़कर मैंने भेदने की नीति से खिड़की से हल्ला किया। बिस्तर अंदर फेंका। कूदकर सिर खिड़की के अंदर ठूँसा और पैर उठाकर खुद का त्रिशंकु कर दिया! मेरी ये हालत देखकर अंदर के लोगों को मुझपर दया आ गई। गाड़ी चलने लगी थी और मैं अंदर खींच लिया गया था। और अब उस महाकाय द्‌वारपाल के कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा था।

पर आश्चर्य की बात यह है कि मेरे अंदर आने के दस मिनट के भीतर ही मेरा कायापलट हो गया। द्‌वारपाल पर आया गुस्सा भी जल्दी ही खत्म हो गया। हम पुराने दोस्तों की तरह गप्पें मारने लगे थे। उसके दिए केले मैंने खाए। मेरी सिगरेट उसने पी। और बाद में हम दोनों अपने-अपने विस्तर जोड़कर उस पर पसर गए। बाहर में उसका सिर फोड़ने का विचार कर रहा था। पर अब उसी की टोली में शामिल हो गया था। मेरी जात बदल गई थी।

अगले स्टेशन पर यात्रियों की एक और टोली हमारे डिब्बे में घुसने लगी। हम दोनों ने उनके विरुद्‌ध एक संयुक्त हल्ला बोल दिया। और 'अंदर के' लोगों के हितों की 'बाहरी लोगों' से रक्षा में जुट गए। बाहरवाला जब अंदरवाला हो जाता है तो वो कितना बदल जाता है– इसका मुझे पहली बार अहसास हुआ।

'बाहरवाला जब अंदरवाला हो जाता है तो वो कितना बदल जाता है। इसका मुझे पहली बार अहसास हुआ।' कहानी का नायक अपनी रेल यात्रा के दौरान ऐसा महसूस करता है। इसी प्रकार का कोई अनुभव आपका है? पेश करें।

विंदा करंदीकर

आपका जन्म 23 अगस्त 1917 को हुआ। आप मराठी के महान कवि हैं। आप मराठी साहित्य में भारत के सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार ज्ञानपीठ से नवाज़ा गए थे। आपने महान यूनानी दार्शनिक अरस्तू की कविताओं का अनुवाद किया था।

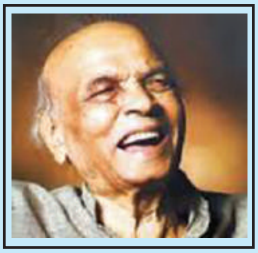

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मदद लें...

नंगे पैर

अंक	-	संख्या
अचरज	-	आश्चर्य
अहाता	-	चारदीवारी
कोलतार	-	अलकतरा, (एक गाढ़ा तरल पदार्थ जो सड़क बिछाने में कामआता है)
झलकना	-	चमकना, आभास होना
टोकना	-	रोकना
नापजोख	-	नापना
पग	-	पैर
परकार	-	नापने आदि का उपकरण
पलंग	-	चारपाई
फाटक	-	बड़ा दरवाज़ा
बजरी	-	ചരൽ gravel சரல் கற்கள் ಮರಳು ಕಲ್ಲು
बैसाखी	-	लंगड़े लोगों के चलने के लिए एक प्रकार का डंडा
माहौल	-	वातावरण
मोची	-	जूता सीनेवाला
राह देखना	-	प्रतीक्षा करना
लाल-पीला होना	-	क्रोध में आना
सकपकाकर	-	चकित होकर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक

अंधड़	- കൊടുങ്കാറ്റ് storm புயல் ಬಿರುಗಾಳಿ
घुमाना	- തിരിക്കുക to rotate திருப்புதல் ತಿರುಗಿಸು
ज्वार	- വേലിയേറ്റം flood tide வேலியேற்றம் ಭರತಇಳಿತ
तूफ़ान	- अंधड़
पतवार	- തുഴ oar துடுப்பு ದೋಣಿಯ ಹುಟ್ಟು
पुतला	- പാവ an idol பாவை ಬೊಂಬೆ
माँझी	- തോണിക്കാരൻ boatman படகோட்டி ಅಂಬಿಗ
विष उगलना	- हानि पहूँचाना
सात सागर	- सप्तसागर- पौराणिक ग्रन्थों में कहा गया कि पृथ्वी सात द्वीपों में बंटी हुई हैं। ये सात द्वीप चारों ओर से सात समुद्रों से घिरे हैं।
साहस तोलना	- ധൈര്യം അളക്കുക to measure courage மன உறுதி அளத்தல் ಧೈರ್ಯವನ್ನು ಅಳೆಯು

अंदर के और बाहर के

हलचल	- उथल-पुथल, खलबली
घुसना	- प्रवेश करना
खुद	- स्वयं
चिपकना	- सटना പറ്റിച്ചേരുക to stick ஒட்டிக்கொள்வது ಅಂಟಿಕೊಳಲು
तारीफ़	- പ്രശംസ praise பாராட்டு ಪ್ರಶಂಸೆ
चारा	- ഉപായം/മാർഗം a remedy தந்திரம் / வழி ಉಪಾಯ
हल्ला करना	- ബഹളം ഉണ്ടാക്കുക சத்தம் போடு ಬೊಬ್ಬೆಮಾಡುವುದು
ठूँसना	- ബലമായി പ്രവേശിപ്പിക്കുക. to penetrate by force. கட்டாயமாக நுழைய வைப்பது ಬಲವಾಗಿಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು
मोर्चा	- लड़ाई
पसरना	- लेटना
टोली	- समूह
अहसास	- തോന്നൽ feeling எண்ணம், தோன்றுதல் ಊಹಿಸು

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राह	-	रास्ता
टोकना	-	ചോദ്യം ചെയ്യുക to interrogate கேள்வி கேட்பது ಪ್ರಶ್ನಿಸು
थमना	-	തടയപ്പെടുക to be prevented தடுத்தல், தடுக்கப்பட வேண்டியது ತಡೆಹಿಡಿಯು
अचरज	-	आश्चर्य ആശ്ചര്യം/അത്ഭുതം surprise ஆச்சரியம் / அற்புதம் ಆಶ್ಚರ್ಯ
सकपकाना	-	അമ്പരക്കുക to be confounded பிரமித்தல் ಚಕಿತಗೊಳ್ಳು
बेधड़क	-	നിർഭയമായി without fear பயமற்ற ನಿರ್ಭಯದಿಂದ
आखिर	-	अंत में

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इकाई 4

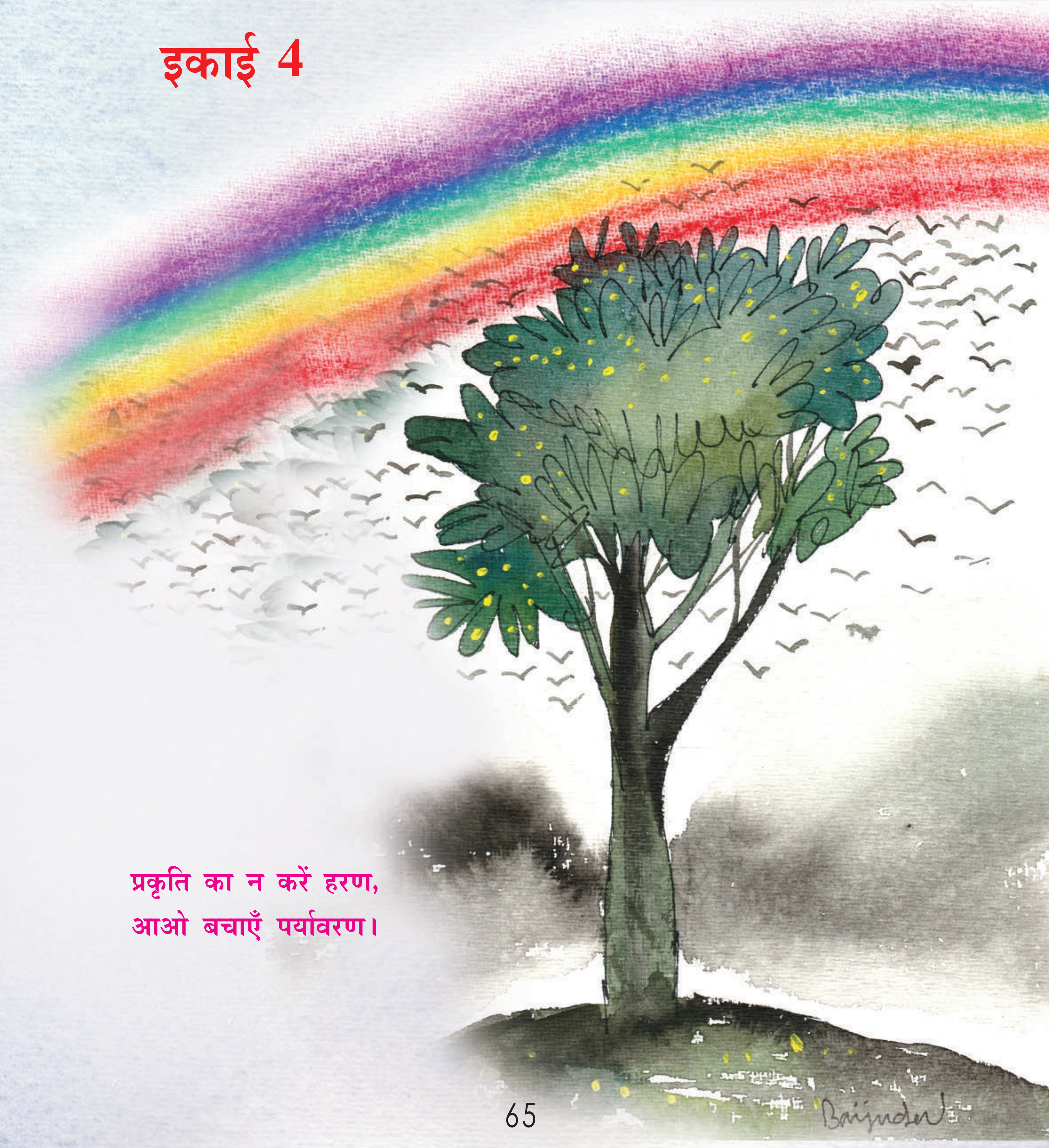

प्रकृति का न करें हरण,
आओ बचाएँ पर्यावरण।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बरसों बीते
बादलों को इधर
बरसे नहीं।

ये पंक्तियाँ किस हालत की ओर संकेत करती हैं?

कविता

अकाल में सारस

केदारनाथ सिंह

तीन बजे दिन में
आ गए वे
जब वे आए
किसीने सोचा तक नहीं था
कि ऐसे भी आ सकते हैं सारस

एक के बाद एक
वे झुंड के झुंड
धीरे-धीरे आए
धीरे-धीरे वे छा गए
सारे आसमान में
धीरे-धीरे उनके क्रेंकार से भर गया
सारा का सारा शहर

वे देर तक करते रहे
शहर की परिक्रमा
देर तक छतों और बारजों पर
उनके डैनों से झरती रही

धान की सूखी
पत्तियों की गंध

अचानक
एक बुढ़िया ने उन्हें देखा
ज़रूर ज़रूर
वे पानी की तलाश में आए हैं
उसने सोचा

वह रसोई में गई
और आँगन के बीचोंबीच
लाकर रख दिया
एक जलभरा कटोरा

लेकिन सारस
उसी तरह करते रहे
शहर की परिक्रमा
न तो उन्होंने बुढ़िया को देखा
न जलभर कटोरे को

'धान की सूखी पत्तियों की गंध' -से किसका आभास होता है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सारसों को तो पता तक नहीं था
कि नीचे रहते हैं लोग
जो उन्हें कहते हैं सारस

सारसों ने जलभर कटोरे को क्यों न देखा होगा?

पानी को खोजते
दूर-देसावर से आए थे वे

पानी को खोजते
दूर-देसावर तक जाना था उन्हें

सो, उन्होंने गर्दन उठाई
एक बार पीछे की ओर देखा
न जाने क्या था उस निगाह में
दया कि घृणा
पर एक बार जाते-जाते
उन्होंने शहर की ओर मुड़कर
देखा ज़रूर

फिर हवा में
अपने डैने पीटते हुए
दूरियों में धीरे-धीरे
खो गए सारस

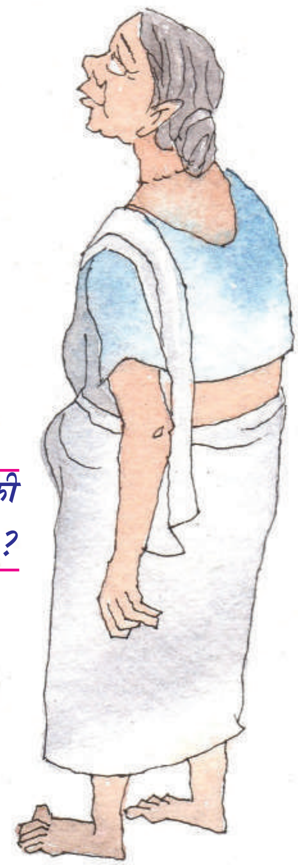

सारसों ने जाते-जाते शहर की ओर क्यों मुड़कर देखा होगा?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

◆ **तुलना करें :**

- ‘तीन बजे दिन में
  आ गए वे।’
- वे दिन में तीन बजे आ गए।

■ कवितांश की संरचना और वाक्य की संरचना का अंतर पहचानें।

■ कविता को गद्य में बदलने पर शब्दों के क्रम में क्या परिवर्तन आया है?

◆ **इन पंक्तियों को गद्य की संरचना में बदलकर लिखें।**

पंक्तियाँ	वाक्य
◆ एक के बाद एक वे झुंड के झुंड धीरे-धीरे आए।	◆
◆ वे देर तक करते रहे शहर की परिक्रमा।	◆
◆	◆

◆ **लेख लिखें :**

- मनुष्य के हस्तक्षेप से प्रकृति का नाश हो रहा है।
- प्रकृति के जल-स्रोतों का नाश होता जा रहा है।
- पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है।

4FZ5KI

इन बातों को ध्यान में रखते हुए ‘अकाल में सारस’ कविता की व्याख्या कर लेख लिखें।

केदारनाथ सिंह

आपका जन्म 1934 को उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िले के चकिया गाँव में हुआ। वे अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक' के कवि हैं। भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा उन्हें वर्ष 2013 का 49वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। प्रमुख रचनाएँ: अभी बिल्कुल अभी, ज़मीन पक रही है, बाघ, तालस्ताय और साईकिल, सृष्टि पर पहरा, ताना-बाना, मेरे समय के शब्द आदि...

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बात बड़ी है पुरानी
थी प्रकृति की भी कहानी
आज आपको भी है सुनानी...

प्रकृति की कहानी क्या है?

पत्र

संसार पुस्तक है

जवाहरलाल नेहरू

अनुवादक : प्रेमचंद

4G91H6

जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अकसर मुझसे बहुत-सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब देने की कोशिश करता हूँ। लेकिन अब, जब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद में, हम दोनों उस तरह बातचीत नहीं कर सकते। इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे-बड़े देशों की जो इस दुनिया में हैं, छोटी-छोटी कथाएँ लिखा करूँ। तुमने हिंदुस्तान और इंग्लैंड का कुछ हाल इतिहास में पढ़ा है। लेकिन इंग्लैंड केवल एक छोटा-सा टापू है और हिंदुस्तान, जो एक बहुत बड़ा देश है, फिर भी दुनिया का एक छोटा-सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस दुनिया का कुछ हाल जानने का शौक है, तो तुम्हें सब देशों का, और उन सब जातियों का जो इसमें बसी हुई हैं, ध्यान रखना पड़ेगा, केवल उस एक छोटे-से देश का नहीं जिसमें तुम पैदा हुई हो।

'हिंदुस्तान, जो एक बहुत बड़ा देश है, फिर भी दुनिया का एक छोटा-सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस दुनिया का... तुम पैदा हुई हो' -इससे आपने क्या समझा?

मुझे मालूम है कि इन छोटे-छोटे खतों में मैं बहुत थोड़ी-सी बातें ही बतला सकता हूँ। लेकिन मुझे आशा है कि इन थोड़ी-सी बातों को भी तुम शौक से पढ़ोगी और समझोगी कि दुनिया एक है और दूसरे लोग जो इसमें

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आबाद हैं हमारे भाई-बहन हैं। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दुनिया और उसके आदमियों का हाल मोटी-मोटी किताबों में पढ़ोगी। उसमें तुम्हें जितना आनंद मिलेगा उतना किसी कहानी या उपन्यास में भी न मिला होगा।

यह तो तुम जानती ही हो कि यह धरती लाखों-करोड़ों वर्ष पुरानी है, और बहुत दिनों तक इसमें कोई आदमी न था। आदमियों के पहले सिर्फ़ जानवर थे, और जानवरों से पहले एक ऐसा समय था जब इस धरती पर कोई जानदार चीज़ न थी। आज जब यह दुनिया हर तरह के जानवरों और आदमियों से भरी हुई है, उस ज़माने का ख्याल करना भी मुश्किल है जब यहाँ कुछ न था। लेकिन विज्ञान जाननेवालों और विद्वानों ने, जिन्होंने इस विषय को खूब सोचा और पढ़ा है, लिखा है कि एक समय ऐसा था जब यह धरती बेहद गर्म थी और इसपर कोई जानदार चीज़ नहीं रह सकती थी। और अगर हम उनकी किताबें पढ़ें और पहाड़ों और जानवरों की पुरानी हड्डियों को गौर से देखें तो हमें खुद मालूम होगा कि ऐसा समय ज़रूर रहा होगा।

तुम इतिहास किताबों में ही पढ़ सकती हो। लेकिन पुराने ज़माने में तो आदमी पैदा ही न हुआ था; किताबें कौन लिखता? तब हमें उस ज़माने की बातें कैसे मालूम हों? यह तो नहीं हो सकता कि हम बैठे-बैठे हर एक बात सोच निकालें। यह बड़े मज़े की बात होती, क्योंकि हम जो चीज़ चाहते सोच लेते, और सुंदर परियों की कहानियाँ गढ़ लेते। लेकिन जो कहानी किसी बात को देखे बिना ही गढ़ ली जाय वह कैसे ठीक हो सकती है? लेकिन खुशी की बात है कि उस पुराने ज़माने की लिखी हुई किताबें न होने पर भी कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती हैं जितनी किसी किताब से होतीं। ये पहाड़, समुद्र, सितारे, नदियाँ, जंगल,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जानवरों की पुरानी हड्डियाँ और भी इसी तरह की और कितनी ही चीज़ें वे किताबें हैं जिनसे हमें दुनिया का पुराना हाल मालूम हो सकता है। मगर हाल जानने का असली तरीक़ा यह नहीं है कि हम केवल दूसरों की लिखी हुई किताबें पढ़ लें, बल्कि खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ें। मुझे आशा है कि पत्थरों और पहाड़ों को पढ़कर तुम थोड़े ही दिनों में उनका हाल जानना सीख जाओगी। सोचो, कितनी मज़े की बात है। एक छोटा-सा रोड़ा जिसे तुम सड़क पर या पहाड़ के नीचे पड़ा हुआ देखती हो, शायद संसार की पुस्तक का छोटा-सा पृष्ठ हो, शायद उससे तुम्हें कोई नई बात मालूम हो जाए। शर्त यही है कि तुम्हें उसे पढ़ना आता हो। कोई ज़बान, उर्दू, हिंदी या अंग्रेज़ी, सीखने के लिए तुम्हें उसके अक्षर सीखने होते हैं। इसी तरह पहले तुम्हें प्रकृति के अक्षर पढ़ने पड़ेंगे, तभी तुम उसकी कहानी उसकी पत्थरों और चट्टानों की किताब से पढ़ सकोगी। शायद अब भी तुम उसे थोड़ा-थोड़ा पढ़ना जानती हो। जब तुम कोई छोटा-सा गोल चमकीला रोड़ा देखती हो, तो क्या वह तुम्हें कुछ नहीं बतलाता? यह कैसे गोल, चिकना और चमकीला हो गया और उसके खुरदरे किनारे या कोने क्या हुए? अगर तुम किसी बड़ी चट्टान को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालो तो हर एक टुकड़ा खुरदरा और नोकीला होगा। यह गोल चिकने रोड़े की तरह बिलकुल नहीं होता। फिर यह रोड़ा कैसे इतना चमकीला, चिकना और गोल हो गया? अगर तुम्हारी आँखें देखें और कान सुनें तो तुम उसीके मुँह से उसकी कहानी सुन सकती हो। वह तुमसे कहेगा कि एक समय, जिसे शायद बहुत दिन गुज़रे हों, वह भी एक चट्टान का टुकड़ा था। ठीक उसी टुकड़े की

'पुराने ज़माने की लिखी हुई किताबें न होने पर भी कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती हैं जितनी किसी किताब से होतीं।' ऐसा क्यों कहा गया है?

'इसी तरह पहले तुम्हें प्रकृति के अक्षर पढ़ने पड़ेंगे' —इसका मतलब क्या है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तरह, उसमें किनारे और कोने थे, जिसे तुम बड़ी चट्टान से तोड़ती हो। शायद वह किसी पहाड़ के दामन में पड़ा रहा। तब पानी आया और उसे बहाकर छोटी घाटी तक ले गया। वहाँ से एक पहाड़ी नाले ने ढकेल कर उसे एक छोटे-से दरिया में पहुँचा दिया। इस छोटे-से दरिया से वह बड़े दरिया में पहुँचा। इस बीच में वह दरिया के पेंदे में लुढ़कता रहा, उसके किनारे घिस गए और वह चिकना और चमकदार हो गया। इस तरह वह कंकड़ बना जो तुम्हारे सामने है। किसी वजह से दरिया उसे छोड़ गया और तुम उसे पा गईं। अगर दरिया उसे और आगे ले जाता तो वह छोटा होते-होते अंत में बालू का एक जर्रा हो जाता और समुद्र के किनारे अपने भाइयों से जा मिलता, जहाँ एक सुंदर बालू का किनारा बन जाता, जिसपर छोटे-छोटे बच्चे खेलते और बालू के घरौंदे बनाते।

अगर एक छोटा-सा रोड़ा तुम्हें इतनी बातें बता सकता है, तो पहाड़ों और दूसरी चीज़ों से, जो हमारे चारों तरफ़ हैं, हमें और कितनी बातें मालूम हो सकती हैं!

◆

जवाहरलाल नेहरू

*जन्म : 14 नवंबर 1889 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में। आप भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं में थे। 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद वे भारत के प्रधानमंत्री बने और मृत्युपर्यंत इस पद पर बने रहे। **'लेटर फ्रम ए फ़ादर टु हिस डॉटर'** नामक पुस्तक नेहरूजी के पत्रों का संकलन है, जो जेल में रहते वक्त अपनी दस साल की बेटी इंदिरा प्रियदर्शिनी को लिखा करते थे। नेहरू की इस पुस्तक का प्रेमचंद द्वारा हिंदी में अनुवाद किया गया था।*

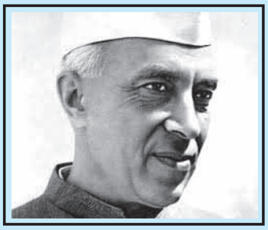

जन्म : 14 नवंबर 1889
मृत्यु : 27 मई 1964

प्रेमचंद

हिंदी कहानी के सबसे समर्थ रचनाकार है प्रेमचंद। उन्होंने सर्वप्रथम उर्दू में लिखना प्रारंभ किया। हिंदी में उनकी सबसे पहली कहानी 'पंच परमेश्वर' 1916 में 'सरस्वती' नामक पत्रिका में छपी। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, निर्मला, गोदान। प्रेमचंद ने निबंध, जीवनी एवं बाल-साहित्य की रचना भी की है।

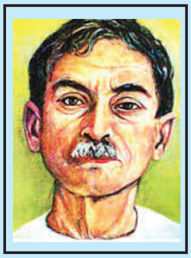

जन्म : 31 जुलाई 1880
मृत्यु : 8 अक्तूबर 1936

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

◆ **वाक्यांशों को उचित खानों में लिखें।**

- पेड़ लगाना।
- पेड़ों को काटना।
- मिट्टी का संरक्षण करना।
- मिट्टी को प्रदूषित करना।
- पहाड़ों का संरक्षण करना।
- चट्टानों को तोड़ना।
- नदी-नालों में कूड़ा कचड़ा डालना।
- जल-स्रोतों का संरक्षण करना।

प्रकृति के साथ	प्रकृति के विरुद्ध
....	....
....	....
....	....
....	....

◆ **'संसार पुस्तक है' लेख के आधार पर सही वाक्यों पर सही का निशान ✓ लगाएँ।**

• हिंदुस्तान बहुत बड़ा देश है।	☐
• दुनिया का हाल जानने के लिए सब देशों पर और उनमें बसी जातियों पर ध्यान रखना है।	☐
• यह पत्र इंदिरा प्रियदर्शिनी को प्रेमचंद ने लिखा है।	☐
• दुनिया में बसे लोग सब भाई-बहन हैं।	☐
• जानवरों से पहले धरती में आदमियों का जन्म हुआ था।	☐
• एक ज़माने में धरती की बेहद गरमी के कारण जानदार चीज़ें नहीं रह सकती थीं।	☐

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

◆ **आशयों का सही मिलान करें।**

1. लाखों पुरानी धरती में	• समय के अनुसार भूमि में हुए परिवर्तनों का अनुमान कर सकते हैं।
2. पुराने समय के जानवरों के बारे में जानने के लिए	• एक ज़माने में धरती बेहद गरम थी।
3. विद्वानों के अध्ययन के अनुसार	• उनकी पुरानी हड्डियाँ महत्वपूर्ण सहायता देती हैं।
4. प्रकृति का निरीक्षण करने से	• कई दिनों तक कोई आदमी नहीं था।

◆ **आत्मकथा लिखें :**

'दुनिया का पुराना हाल जानने के लिए खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ें।'

- संसार-रूपी पुस्तक में आप क्या-क्या पढ़ सकते हैं?
- आपके इलाके की भी एक कहानी होती है। लिखें उसकी आत्मकथा।

◆ **ये वाक्य पढ़ें :**

- इंग्लैंड केवल एक छोटा-सा टापू है।
- हिंदुस्तान दुनिया का छोटा-सा हिस्सा है।

इन बातों को मिलाकर पाठ भाग में कैसे प्रस्तुत किया गया है?

देखें :

'...इंग्लैंड केवल एक छोटा-सा टापू है **और** हिंदुस्तान, **जो** एक बहुत बड़ा देश है, **फिर भी** दुनिया का एक छोटा-सा हिस्सा है।'

- ऐसी प्रस्तुति में कौन-सा नया आशय मिलता है?
- इसमें रेखांकित शब्दों की भूमिका पहचानें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

◆ **मिश्रित वाक्य चुनें :**

- पाठ-भाग से ऐसे मिश्रित वाक्यों को चुनकर लिखें।
- उन्हें सरल वाक्यों में विभाजित करें।
- योजक शब्दों को सूचीबद्ध करें।

◆ **प्रकृति संरक्षण का अवबोध जगाने लायक पोस्टर तैयार करें।**

4GHWNT

नेहरूजी के अनुसार संसार एक पुस्तक है। इससे हम प्रकृति का हाल सीख सकते हैं। बारिश के वक्त प्रकृति का हाल कैसा होता है? यह जानने के लिए खुद पढ़ें, आमोद कारखानिस का लेख 'दौड़'।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अतिरिक्त वाचन के लिए

लेख

दौड़

आमोद कारखानिस

मई की कड़ी धूप। सूरज जैसे आग उगल रहा है। पतझड़ ने पहले से कई पेड़ों को सुखा दिया है। उन्हें बे-पत्ती कर दिया है। और मई के तपते सूरज ने पानी के स्रोत भी सुखा दिए हैं। सूखी धरती में दरारें पड़ गई हैं। न पत्तियाँ, न पानी– जंगल जैसे सुनसान हो गया है।

और जून का महीना आता है...

दक्षिण के काले-काले बादल उमड़-घुमड़कर आते हैं– बारिश की पहली बूँदें पड़ते ही मिट्टी से सौंधी गंध उठती है! थमी ज़िंदगी जैसे अचानक जाग उठती है– और शुरु हो जाती है, एक दौड़!!

अजब दौड़ है, गजब दौड़ है कि ये ज़िंदगी यारो दौड़ है....

इधर दौड़ है, उधर दौड़ है ये जीना यारो दौड़ है......

आमोद कारखानिस

जंगली जीवन के मशहूर फोटोग्राफर एवं लेखक। प्रमुख रचना 'मेरी डायरी के कुछ पन्ने'।

बारिश की बौछारों के साथ ज़मीन के अंदर सोए हज़ारों-हज़ार बीज जाग उठते हैं– नए जीवन की शुरुआत होती है। नए अंकुर पनपते हैं ज़मीन पर इधर-उधर, सभी जगह। पर, प्रकृति की खूबसूरती तो देखिए! इतने सारे बीज पनपना शुरु करते हैं– कुछ एक साथ, कुछ थोड़ा आगे-पीछे। सभी को चाहिए पानी, पोषक तत्व और प्रकाश भी।

यह दौड़ है उनकी समय के साथ।

उनके पास समय बहुत कम है। बीजों में जो खाना जमा है वह खत्म होने के पहले नए पौंधों को स्थापित होना है। जड़ें फैलानी हैं जिससे वे ज़मीन से पानी और पोषक पदार्थ ले सकें। पत्तियाँ उगानी हैं। यही पत्तियाँ फिर प्रकाश संश्लेषण से खाना बनाएँगी। यह सब बीजों में जमा सीमित खाद्य पदार्थ के साथ करना है।

अभी तो यह मौसम की शुरुआत है। पानी अभी तक ज़मीन के नीचे गहराई तक रिसा नहीं है। बड़े-बड़े पेड़ जिनकी जड़ें ज़मीन में गहराई तक गई हैं अभी तक जागे नहीं हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

छोटे पौधों केलिए यही मौका है। बड़े पेड़ पत्तियाँ उगाना शुरु कर देंगे तो ज़मीन तक कम धूप पहुँच पाएगी। पौधों को खाना बनाने केलिए आकाश की ज़रूरत है– उनके पास वक्त कम है।

और संघर्ष है जीने के लिए भी।

पेड़-पौधों में जब इतना कुछ हो रहा हो तो जंतु-जगत इससे अछूता कैसे रहे? कुछ कीड़ों के अंड़े, कोष जो सोए हुए थे, जाग जाते हैं। उठो भाई, बहुत सारे मुलायम स्वादिष्ट पत्ते उपलब्ध हैं। अंडों से लार्वा निकलते हैं। और निकलते ही वे भुक्खड़ों की तरह खाना शुरु कर देते हैं– उनकी भी तो दौड़ है।

इल्ली से वयस्क तक की सभी अवस्थाएँ पूरी करने के लिए कुछ कीड़ों को पानी की, कुछ को इस वक्त फूटी नई पत्तियों की ज़रूरत होती है। थोड़ा ही समय है इन कीड़ों के पास ये सभी अवस्थाएँ पूरी करने के लिए। इन्हें साथी तलाशना है और अंडे देने हैं जो अगले साल इसी प्रक्रिया को आगे ले जाएँगे। हाँ, साथ में खुद को बचाकर भी तो रखना है। छोटी-मुलायम इल्लियाँ किसी भी शिकारी – बहुत सारे पक्षियों, बड़े कीड़ों, छिपकलियों – का जी ललचा सकती हैं।

गर्मियों में जिन पक्षियों ने घोंसला बना लिए थे वहाँ मादा अंडे दे चुकी है। कइयों में बच्चे भी आ चुके हैं। ये छुटके बड़े खाऊ होते हैं। एक तो वे खाते ज़्यादा हैं, दूसरे बड़ी तेज़ी से बढ़ते हैं। उनके माँ-बाप दिन-रात उनके लिए खाना लाने में लगे रहते हैं।

और संघर्ष है जीने के लिए भी।

मादा एक घोंसले में अमूमन 2-3 अंडे देती हैं। हर बच्चे की भरसक कोशिश होती है माता-पिता द्वारा लाए खाने से ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा पाने के लिए– धक्का-मुक्की, एक-दूसरे पर चढ़ बैठना, लड़ना-झगड़ना, चोंच मारना, कमज़ोर को घोंसले से गिरा देना सब होता है यहाँ। जीने का संघर्ष जारी है।

बड़े पेड़ों पर अब नए पत्ते निकलना शुरु हो गए हैं। धीरे-धीरे ज़मीन तक पहुँचनेवाली रोशनी कम होती जाएगी। छोटे पौंधों की खुशहाली के दिन खत्म होने को हैं। पर, कहानी यहाँ खत्म नहीं होती। नए पौधे आते हैं। पौधों पर फूल आते ही कितने सारे कीड़े, मधुमक्खियाँ मंडराने लगती हैं। कहानी आगे बढ़ती रहती है। ज़िंदगी आगे बढ़ती रहती है। नए आयाम, नए खिलाड़ी, नई रचनाओं के साथ– जीवन की विविधता को और समृद्ध बनाते हुए।

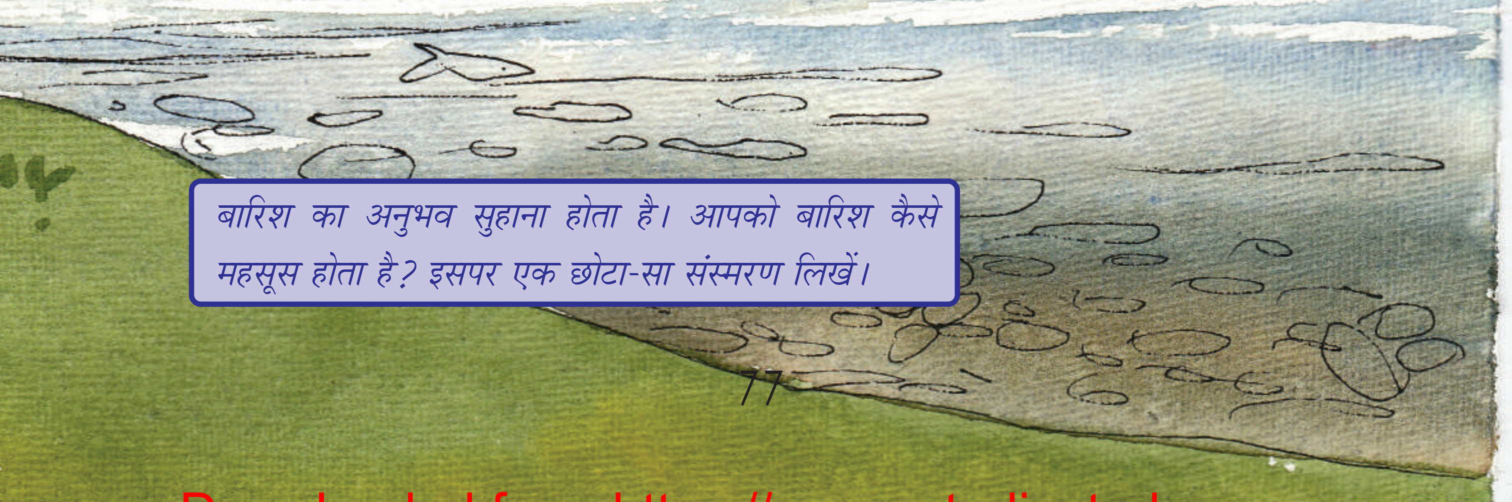

बारिश का अनुभव सुहाना होता है। आपको बारिश कैसे महसूस होता है? इसपर एक छोटा-सा संस्मरण लिखें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मदद लें...

अकाल में सारस

अकाल	-	ക്ഷാമകാലം famine வறட்சிக் காலம் ಬರಗಾಲ
सारस	-	സാരസ പക്ഷി A species of heron, crane(bird) சாரச பறவை ಕೊಕ್ಕರೆ
क्रेंकार	-	സാരസപക്ഷിയുടെ കരച്ചിൽ சாரசபறவையின் அழுகை ಕೊಕ್ಕರೆಯ ಕೂಗು
बारज	-	മട്ടുപ്പാവ് balcony மொட்டைமாடி ಮಾಳಿಗೆ
झरना	-	പൊഴിഞ്ഞുവീഴുക to fall off/pour down சொட்டாக விழுவது ಎಲೆಗಳ ತುಂಡಾಗಿ ಬೀಳುವುದು
निगाह	-	നോട്ടം look பார்வை ದೃಷ್ಟಿ
पानी की तलाश	-	पानी की खोज
डैने पीटना	-	ചിറകടിക്കുക flap the wings சிறகடிப்பது ರೆಕ್ಕೆ ಬಡಿಯುವುದು

संसार पुस्तक है

आबाद	-	बसा हुआ
इरादा	-	विचार, इच्छा
कंकड़	-	पत्थर का टुकड़ा
ख़याल	-	ध्यान, सोच-विचार, कल्पना
खुरदरा	-	പരുപരുത്ത rough சொரசொரப்பான ದೊರಗು

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

घरौंदा - കളിവീട് a play house விளையாட்டு வீடு ಮಕ್ಕಳ ಆಟದ ಮನೆ

घाटी - മലയിടുക്ക് a valley /a mountain passமலை இடுக்கு ಪರ್ವತದ ಕಡಿದಾದ ಸ್ಥಳ

चट्टान - പാറക്കെട്ട് rock பாறைக்கூட்டம் ಬಂಡೆಗಲ್ಲು

चमकीला - തിളക്കമുള്ള glittering பளபளப்பான ಪ್ರಕಾಶವಾದ

ज़र्रा - अत्यंत छोटा टुकड़ा

टापू - द्वीप

दरिया - नदी

नोकीला - മുനയുള്ള pointed /sharp கூர்மயான ಚೂಪಾದ

परी - अप्सरा

पेंदा - तला, वस्तु का निचला भाग

बालू - रेत

बेहद गरम - अत्यंत गरम

रोड़ा - पत्थर का टुकड़ा വലിയ ചരൽ a piece of stone/gravel பெரிய சரல் ದೊಡ್ಡಹರಳುಕಲ್ಲು

दौड़

कड़ी - कठिन

पतझड़ - शिशिर ऋतु

धरती - भूमि

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सुनसान	-	शून्य
थमी	-	निश्चल
शुरू	-	आरंभ
अजब	-	आश्चर्यजनक
बारिश	-	वर्षा
खूबसूरती	-	सुंदरता
खतम होना	-	समाप्त होना
रिसना	-	बहुत सूक्ष्म छिद्रों द्वारा नीचे उतरना
वक्त	-	समय
अछूता	-	अस्पर्श
भुक्खड़	-	भूखा
तलाशना	-	ढूँढ़ना
मादा	-	स्त्री
खाऊ	-	खानेवाला
अमूमन	-	लगभग
भरसक	-	कठिन
कोशिश	-	परिश्रम
रोशनी	-	प्रकाश

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इकाई 5

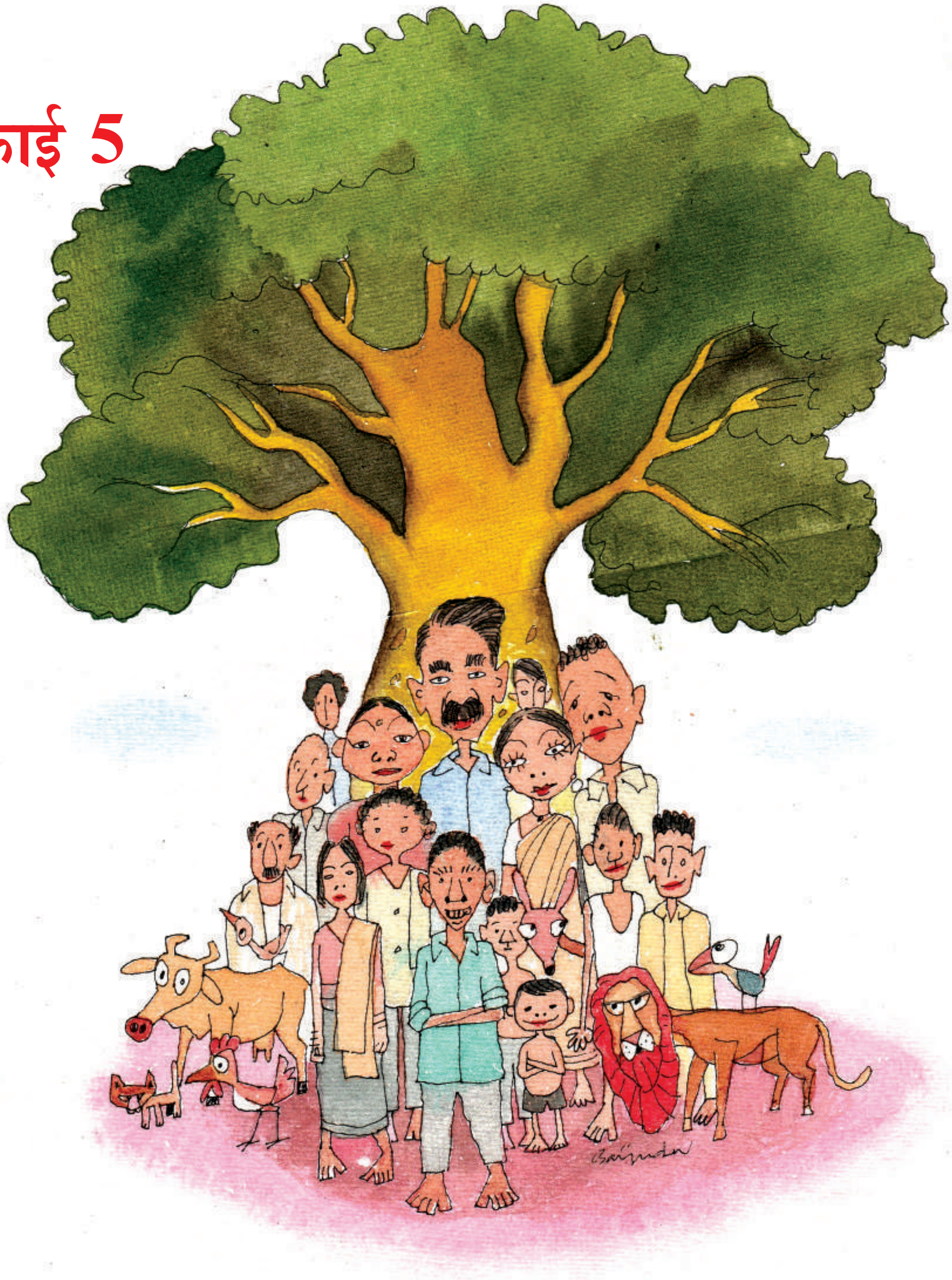

सूखता नहीं
यह प्रेम का वट
तुम्हारा बोया

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सूखता नहीं
यह प्रेम का वट
तुम्हारा बोया

• *यहाँ 'तुम' कौन हो सकता है?*

मेरी ममतामई माँ

डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम

द्‌वितीय विश्वयुद्‌ध के दौरान हमारा परिवार कठिनाइयों के बीच से गुजर रहा था। मैं उस समय दस साल का था और युद्‌ध रामेश्वरम में हमारे दरवाज़े तक प्रायः पहुँच चुका था। सभी वस्तुओं की किल्लत हो गई थी।

हमारा परिवार एक विशाल संयुक्त परिवार था, जिसमें मेरे पिता एवं चाचाओं के परिवारजन एक साथ रहते थे। इस विशाल कुनबे को मेरी दादी और माँ मिलकर सँभालती थीं। घर में कभी-कभी तीन-तीन पालनों पर बच्चे झूलते रहते थे। खुशी और ग़म का आना-जाना लगा रहता था।

एकल परिवार और संयुक्त परिवार की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। चर्चा करें।

मैं अपने शिक्षक श्री स्वामियार के पास गणित पढ़ने जाने के लिए प्रायः चार बजे जग जाता था। वे एक अद्‌वितीय गणित-शिक्षक थे। वे निःशुल्क ट्‌यूशन पढ़ाते थे और एक साल में पाँच ही बच्चों को पढ़ाते थे। अपने सभी छात्रों पर उन्होंने एक कठोर शर्त लगा रखी थी। शर्त यह कि सभी छात्र स्नान करके पाँच बजे उनकी कक्षा में उपस्थित हो जाएँ। मेरी माँ मुझसे पहले जग जाती थीं। वे मुझे नहलातीं और ट्‌यूशन के लिए तैयार करतीं। मैं साढ़े पाँच बजे घर वापस लौटता।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उस समय नमाज़ अदा करने तथा अरबी स्कूल में कुरान शरीफ़ सीखने के लिए मुझे ले जाने को पिता मेरी प्रतीक्षा कर रहे होते। उसके बाद मैं अपने घर से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित रामेश्वरम रोड़ रेलवे स्टेशन पैदल जाता। वहाँ से होकर गुज़रनेवाली धनुष्कोडी मेल से समाचार पत्रों का बंडल लेता और तेजी से शहर लौटता। शहर में सबसे पहले मैं ही लोगों तक समाचार पत्र पहुँचाता था।

'शहर में सबसे पहले मैं ही लोगों तक समाचार पत्र पहुँचाता था।' -इस प्रस्ताव से बालक कलाम का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

यह जिम्मेदारी निभाने के बाद मैं आठ बजे तक घर वापस आ जाता। उस समय मेरी माँ मुझे सामान्य नाश्ता देतीं; जो मेरे अन्य भाई-बहनों को दिए जानेवाले नाश्ते की तुलना में कुछ विशेष होता; क्योंकि मैं पढ़ाई और कमाई एक साथ करता था। स्कूल की छुट्‌टी के बाद शाम को मैं फिर ग्राहकों से बकाया राशि की वसूली के लिए निकल पड़ता।

उन दिनों की एक घटना मुझे अभी भी याद है। हम सभी भाई-बहन साथ बैठकर खाना खा रहे थे और माँ मुझे रोटी देती जा रही थीं। (चूँकि हम भात खानेवाले लोग हैं इसलिए चावल तो खुले बाज़ार में उपलब्ध था किंतु गेहूँ पर राशनिंग थी।)

जब मैं खाना खा चुका तो मेरे बड़े भाई ने मुझे एकांत में बुलाकर डाँटा, "कलाम, जानते हो क्या हुआ? तुम रोटी खाते जा रहे थे और माँ तुम्हें रोटी देती जा रही थीं। उन्होंने अपने हिस्से की भी सारी रोटियाँ तुम्हें दे दीं। अभी घर की परिस्थिति ठीक नहीं है। एक जिम्मेदार बेटा बनो और अपनी माँ को भूखों मत मारो।"

'उन्होंने अपने हिस्से की भी सारी रोटियाँ तुम्हें दे दीं' - भाई की इस बात पर बालक कलाम की प्रतिक्रिया क्या होगी?

उस दिन पहली बार मुझे सिहरन की अनुभूति हुई। मैं अपने आपको रोक नहीं सका। दौड़कर अपनी माँ के पास गया और भावावेश में उनसे लिपट गया। मैं अब भी पूनम की रात में अपनी माँ को याद करता हूँ। उस स्मृति की छवियाँ मेरी पुस्तक 'अग्नि की उड़ान' में संगृहीत 'माँ' कविता में उभरी हैं। यह मेरी माँ की कहानी है। वे तिरानबे साल की उम्र तक जीवित रहीं। वे एक स्नेहशील, दयालु और धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। मेरी माँ रोज़ पाँच बार नमाज़ अदा करती थीं। मैंने जब भी उन्हें नमाज़ अदा करते हुए देखा, तब मैं प्रेरित हुआ और मैंने अपने अंदर परिवर्तन महसूस किया। नारी ईश्वर की सुंदर रचना है। मैं दो महान महिलाओं की स्मृति से सदैव प्रेरित एवं उत्साहित होता रहा हूँ। इनमें से एक मेरी माँ हैं तथा दूसरी भारतरत्न एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी।

'नारी ईश्वर की सुंदर रचना है'- कलाम को ऐसा क्यों लगा?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

◆ **मिलान करें।**

महायुद्ध का प्रभाव रामेश्वरम में भी हुआ।	इसलिए भाई-बहनों की तुलना में विशेष भोजन मिलता था।
बालक कलाम पढ़ाई और कमाई एक साथ करता था।	वह भावावेश में उनसे लिपट गया।
बालक कलाम संयुक्त परिवार में रहता था।	सभी वस्तुओं की किल्लत हुई।
माँ का प्यार समझकर बालक कलाम को सिहरन की अनुभूति हुई।	वहाँ खुशी और ग़म का अनुभव होता था।

◆ **बातचीत लिखें।**

- ‘उस दिन पहली बार मुझे सिहरन की अनुभूति हुई। मैं अपने आपको रोक नहीं सका। दौड़कर अपनी माँ के पास गया और भावावेश में उनसे लिपट गया।’ इस प्रसंग पर बालक कलाम और माँ के बीच क्या-क्या बातें हुई होंगी?

◆ **नमूने के अनुसार बदलकर लिखें।**

बालक कलाम पढ़ाई के साथ कमाई भी करता था।	बालक कलाम पढ़ाई के साथ कमाई भी करता है।
गणित-शिक्षक पाँच छात्रों को पढ़ाते थे।	

अनुबद्ध कार्य

◆ **विशेषांक निकालें।**

‘**कलाम, अपना कलाम**’ –शीर्षक पर कक्षा में एक विशेषांक निकालें।

डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम

डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम का जन्म रामेश्वरम में हुआ। भारत के पूर्व राष्ट्रपति, प्रसिद्ध वैज्ञानिक और प्रभावी वक्ता के रूप में वे विख्यात हैं। उनका राष्ट्रपति कार्यकाल 25 जुलाई 2002 से 25 जुलाई 2007 तक रहा। उन्हें ‘मिसाईल मैन’ के नाम से भी जाना जाता है। विंग्स ऑफ़ फ़ायर, इंडिया 2020- ए विशन फ़ॉर द न्यू मिलेनियम, भारत की आवाज़, टर्निंग पॉइंट्स, हम होंगे कामयाब आदि उनकी रचनाएँ हैं। पुरस्कार : पद्म भूषण, पद्म विभूषण, भारत रत्न आदि।

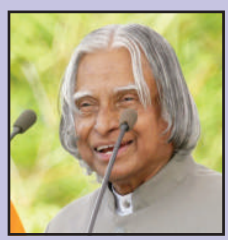

जन्म :15 अक्तूबर 1931
मृत्यु : 27 जुलाई 2015

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पद

राग गौरी

सूरदास

4H1NS4

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो।
मोसों कहत मोल को लीनो तोहि जसुमति कब जायो।।
कहा कहौं एहि रिसि के मारे खेलन हौं नहिं जातु।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता को है तुमरो तातु।।
गोरे नंद जसोदा गोरी तुम कत स्याम सरीर।
चुटकी दै दै हँसत ग्वाल सब सिखै देत बलवीर।।
तू मोही को मारन सीखी दाउहि कबहुं न खीझै।
मोहन को मुख रिस समेत लखि जसुमति सुनि सुनि रीझै।।
सुनहु कान्ह बलभद्र चवाई जनमत ही को धूत।
'सूर' स्याम मोहि गोधन की सौं हौं माता तू पूत।।

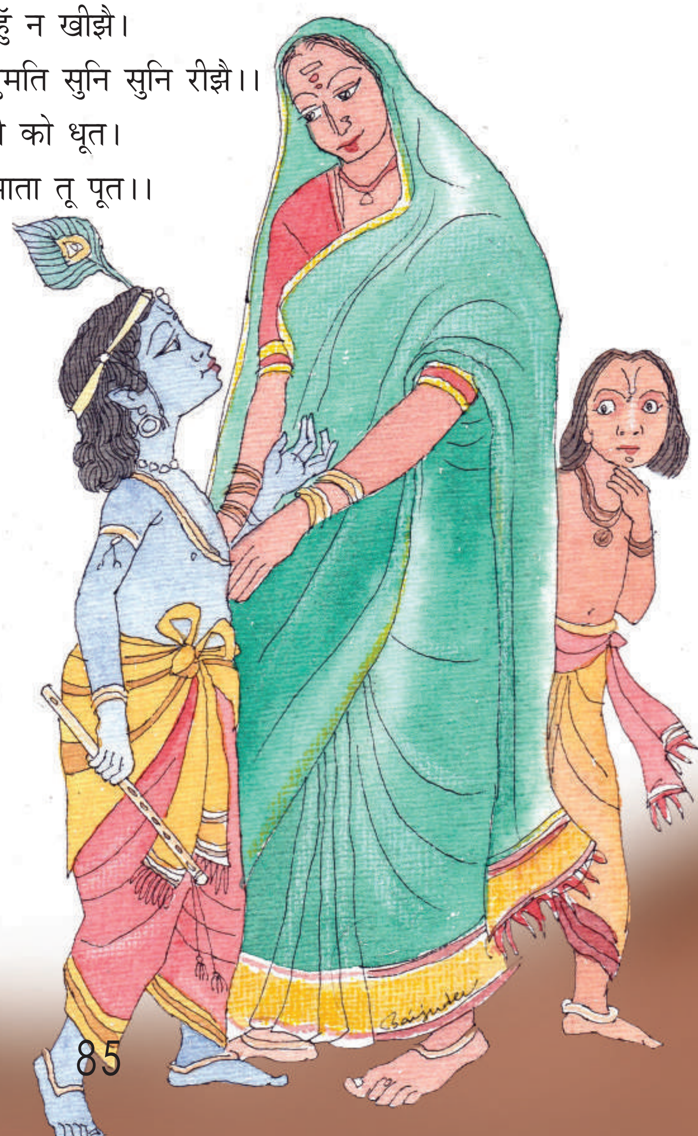

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

◆ समानार्थी शब्द कविता में ढूँढ़ें।

खड़ीबोली	व्रज
मुझे	
मुझसे	
तुझे	
क्रोध	
श्याम	
देखकर	

◆ कविता में कृष्ण अपनी माँ से कुछ शिकायतें कर रहा है। कविता के प्रसंग में यशोदा और बालक कृष्ण के बीच का वार्तालाप लिखें।

सूरदास

हिंदी के कृष्णकाव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं सूरदास। उनकी प्रामाणिक रचनाएँ हैं- सूरसागर, सूर-सारावली तथा साहित्य-लहरी।

अनमोल रिश्तों पर एक और कविता है– 'ओ मेरे पिता'। एकांत श्रीवास्तव की यह कविता पढ़ें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अतिरिक्त वाचन के लिए

कविता

ओ मेरे पिता

एकांत श्रीवास्तव

मायावी सरोवर की तरह
अदृश्य हो गए पिता
रह गए हम
पानी की खोज में भटकते पक्षी

ओ मेरे आकाश पिता
टूट गए हम
तुम्हारी नीलिमा में टँके
झिलमिल तारे

◆ मातृभाषा की किसी एक लघुकथा का हिंदी में अनुवाद करें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ओ मेरे जंगल पिता
सूख गए हम
तुम्हारी हरियाली में बहते
कलकल झरने

ओ मेरे काल पिता
बीत गए तुम
तुम्हारे कैलेंडर की
उदास तारीखें

हम झेलेंगे दुख
पोंछेंगे आँसू
और तुम्हारे रास्ते पर चलकर
बनेंगे सरोवर, आकाश, जंगल और काल
ताकि हरी हो घर की एक-एक डाल।

- **कविता का आलाप करें।**

एकांत श्रीवास्तव

जन्म : 08 फरवरी 1964 को छत्तीसगढ़ के छुरा में। प्रमुख रचनाएँ : अन्न हैं मेरे शब्द, मिट्‌टी से कहूँगा धन्यवाद, बीज से फूल तक। पुरस्कार : शरद बिल्लौरे पुरस्कार, केदार सम्मान, दुष्यंतकुमार पुरस्कार आदि...

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मदद लें...

मेरी ममतामई माँ

कुनबा	-	परिवार
किल्लत	-	कमी
ग़म	-	दुख
गुज़र रहना	-	കടന്നു പോവുക pass on கடந்து செல்லுதல் ದಾಟು
ग्राहक	-	खरीदनेवाला
चूँकि	-	कारण यह है कि, क्योंकि
छवियाँ	-	झलक
ज़िम्मेदारी	-	ഉത്തരവാദിത്തം responsibility பொறுப்பு ಜವಾಬ್ದಾರಿ
डाँटा	-	ശകാരിച്ചു scolded திட்டினான் ಬಯ್ಯು
नमाज़ अदा करना	-	നമസ്കരിക്കുക to offer prayers (prescribed by Islamic law) வணங்குதல் ನಮಸ್ಕಾರ
नहलाना	-	കുളിപ്പിക്കുക to bath குளிப்பாட்டப்படுதல் ಸ್ನಾನಮಾಡಿಸು
नाश्ता	-	सुबह का खाना; कलेवा
निभाना	-	निर्वाह करना
निःशुल्क	-	मुफ्त
पालना	-	തൊട്ടിൽ cradle தொட்டில் ತೊಟ್ಟಿಲು
पूनम	-	पूर्णिमा
बंडल	-	കെട്ട് bundle மூட்டை ಕಟ್ಟು

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बकाया	-	बाकी
भूखों मारना	-	പട്ടിണിക്കിട്ട് കൊല്ലുക strave to death பட்டிணிப்போட்டு கொல்லுதல் ಆಹಾರಕೊಡದೆ ಸಾಯಿಸು
राशि	-	रकम തുക amount அளவு ಮೊತ್ತ
लिपटना	-	आलिंगन करना; सटना
वसूली करना	-	പിരിച്ചെടുക്കുക to recover வசூலித்தல் ಸ್ವಾಧೀನಪಡಿಸು
शर्त	-	നിബന്ധന condition விதிமுறைகள் ನಿಬಂಧನೆ
सिहरन	-	कंपन, വിറയൽ, shivering, நடுங்குதல்
संयुक्त परिवार	-	കൂട്ടുകുടുംബം joint family கூட்டு குடும்பம் ಅವಿಭಕ್ತಕುಟುಂಬ

राग गौरी

एहि	-	इस
कत	-	क्यों
कबहुँ	-	कब, कभी
कहा कहौं	-	कहते कहते
खिझायो	-	खिजलाता है, चिढ़ाता है ദേഷ്യം പിടിപ്പിക്കുന്നു irritating கோபம் கொள்ளவைப்பது ಕೋಪಗೊಳಿಸು
कबहुँ न खीझै	-	कभी नहीं खिजलाती हैं / चिढ़ाती हैं
गोरे	-	सफ़ेद
चवाई	-	निदंक, दूसरों की बुराई फैलानेवाले

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चुटकी देना	-	बीच की अँगुली पर अँगूठा छटकाकर शब्द करना। വിരൽഞൊടിക്കുക விரல் நொடித்தல் ಬೆರಳುಗಳಿಂದ ಚಿಟಿಕೆ ಹೊಡೆಯು
जनमत	-	जन्म से ही
जायो	-	जन्म दिया
तातु	-	पिता
तुमरो	-	तुम्हारा
तोहि	-	तुझे
दाउहि	-	दाऊ, बड़ा भाई, बलराम
धूत	-	बदमाश വഷളൻ wicked முட்டாள் ಕೇಡಿ
नंद	-	नंदगोप
पुनि-पुनि	-	बार-बार
पूत	-	पुत्र
मैया	-	माँ
मोल को लीनो	-	मूल्य देकर ले लिया
मोसों	-	मुझसे
मोहि	-	मुझे
रिसि	-	रिस, रोष, नाराज़गी
रीझै	-	प्रसन्न होती हैं, आकृष्ट होती हैं
लखि	-	देखकर
हँसत	-	हँसना
हौं	-	मैं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ओ मेरे पिता

खोज	-	तलाश
झेलना	-	सहना
सरोवर	-	तालाब

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अपनी पहचान

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अपनी पहचान

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भारत का संविधान

भाग 4 क

नागरिकों का मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य -

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेद-भावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उनका परिरक्षण करे,

छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्यजीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे

झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे,

ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके, और

ट) छह और चौदह साल के बीच के अपने बच्चे/बच्ची को या अपने संरक्षण में रहनेवाले बच्चे/बच्ची को उसके माता-पिता या अभिभावक तदनुकूल शिक्षा प्रदान करने का अवसर दें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बच्चों के हक

प्यारे बच्चो,

क्या आप जानना चाहेंगे कि आपके क्या-क्या हक हैं? अधिकारों का ज्ञान आपको सहभागिता, संरक्षण, सामाजिक नीति आदि सुनिश्चित करने की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन देगा। आपके अधिकारों के संरक्षण के लिए अब एक आयोग है- 'केरल राज्य बालाधिकार संरक्षण आयोग'। देखें, आपके क्या-क्या हक हैं-

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हक
- व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ जीने का हक
- उत्तरजीविता का एवं सर्वांगीन विकास का हक
- धर्म, जाति, वर्ग एवं वर्ण की संकीर्णता से बढ़कर आदर पाने एवं मान्यता प्राप्त करने का हक
- मानसिक, शारीरिक एवं लिंगपरक अतिक्रमण से परिरक्षण पाने का हक
- भागीदारी का हक
- बालश्रम से एवं खतरनाक पेशों से मुक्ति का हक
- बाल विवाह से परिरक्षण पाने का हक
- अपनी संस्कृति जानने एवं तदनुरूप जीने का हक
- उपेक्षाओं से परिरक्षण पाने का हक
- मुफ़्त तथा ज़बरदस्त शिक्षा पाने का हक
- खेलने तथा पढ़ने का हक
- सुरक्षित एवं प्रेमयुक्त परिवार तथा समाज में जीने का हक

कुछ दायित्व

- स्कूल एवं सार्वजनिक संस्थाओं का परिरक्षण करना।
- स्कूल एवं शैक्षिक प्रक्रियाओं में समय की पाबंदी रखना।
- अपने माता-पिता, अध्यापक, स्कूल के अधिकारी तथा मित्रों का आदर करना और उन्हें मानना।
- जाति-धर्म-वर्ग-वर्ण की संकीर्णताओं से बढ़कर दूसरों का आदर एवं सम्मान करना।

Contact Address:

Kerala State Commission for Protection of Child Rights
'Sree Ganesh', T. C. 14/2036, Vanross Junction
Kerala University P. O., Thiruvananthapuram - 34, Phone : 0471 - 2326603
Email: childrights.cpcr@kerala.gov.in, rte.cpcr@kerala.gov.in
Website : www.kescpcr.kerala.gov.in

Child Helpline - 1098, Crime Stopper - 1090, Nirbhaya - 1800 425 1400

Kerala Police Helpline - 0471 - 3243000/44000/45000

*Online **R. T. E Monitoring : www.nireekshana.org.in***

Downloaded from https:// www.studiestoday.com